ज्ञानामृत

मासिक
वर्ष 40, अंक 05, नवम्बर 2004, मूल्य 5.00

1. बिलासपुर (छ.ग.)- विशाल आध्यात्मिक कार्यक्रम 'प्रभु मिलन महोत्सव' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. आरती बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. नीलू बहन, पार्श्व गायिका बहन अनुराधा पौडवाल, छ.ग. के मुख्यमंत्री डॉ. भ्राता रमन सिंह जी, वित्त मंत्री भ्राता अमर अग्रवाल जी, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. भ्राता कृष्णमूर्ति बांधी जी, सांसद भ्राता पुन्नूलाल मोहले जी, सांसद भ्राता बद्रीधर दीवान जी। 2. तिरुवनन्तपुरम- विशाल आध्यात्मिक कार्यक्रम 'महा तपस्विनी संगम' में राष्ट्र गान के अवसर पर मंच पर विराजमान हैं (बांये से)– पूर्व सी.बी.आई. निदेशक भ्राता कार्तिकेयन जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, केरल के राज्यपाल महामहिम भ्राता आर.एल. भाटिया जी, ब्र.कु. भ्राता बृजमोहन जी, ब्र.कु. शांता बहन जी।

1. **जगन्नाथपुरी**- गोबर्धन पीठ के जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती महाराज जी को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुई ब्र.कु. निरुपमा बहन। 2. **वीरगंज**- नेपाल के उप-प्रधानमंत्री भ्राता भरतमोहन अधिकारी को आत्म-स्मृति का तिलक लगाकर सम्मानित करती हुई ब्र.कु. मीना बहन। 3. **कोलकाता**- दादाभाई नॉरोजी की स्मृति में रखे गए कार्यक्रम में मंचासीन राजयोगिनी दादी निर्मलशांता जी तथा प.बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता वीरेन शाह। 4. **पठानकोट**- पूर्व उप-प्रधानमंत्री भ्राता लालकृष्ण आडवानी जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई ब्र.कु. सत्या बहन। 5. **सिकन्दराबाद (आ.प्र.)**- राज्यपाल महामहिम भ्राता सुरजीत सिंह बरनाला जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई ब्र.कु. मन्जू बहन, ब्र.कु. सरोज बहन तथा अन्य। 6. **चण्डीगढ़**- 'बेहतर प्रशासन के लिए नई संकल्पना' विषयक सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए पंजाब के मुख्य सचिव भ्राता वी.एन. ओझा जी, ब्र.कु. राजयोगिनी अचल बहन जी, ब्र.कु. आशा बहन जी, भ्राता आर.के. मित्तल जी, ब्र.कु. भ्राता महेन्द्र जी, ब्र.कु. भ्राता अमीरचन्द जी तथा ब्र.कु. लक्ष्मण भाई जी। 7. **रायपुर**- शिक्षाविद् सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए छ.ग. के शिक्षा एवं लोक निर्माण मंत्री भ्राता राजेश मूणत जी, इन्दिरा कला एवं संगीत वि.वि. की कुलपति डॉ. बहन पूर्णिमा पाण्डे जी, हिदायतुल्ला राष्ट्रीय विधि वि.वि. के कुलपति डॉ. भ्राता जॉन्स पी. वर्गीस जी, पं. रविशंकर वि.वि. के कुलपति डॉ. भ्राता बी.पी. चन्द्रा जी, ब्र.कु. भ्राता मृत्युंजय, ब्र.कु. डेनिस बहन और ब्र.कु. भ्राता ओमप्रकाश जी। 8. **गुवाहाटी**- 'सफलता का राज–राजयोग' विषयक कार्यक्रम में प्रवचन करती हुई ब्र.कु. राजयोगिनी चक्रधारी बहन जी। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. भ्राता जी.एन. तालुकदार जी तथा ब्र.कु. शीला बहन जी मंच पर विराजमान हैं।

संजय की कलम से –

दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य

कार्तिक की अमावस्या को भारतवर्ष के घर-घर में प्रकाश-दीप जगमगा उठते हैं और बाल-वृद्ध आनन्द से भर जाते हैं। सभी अपने-अपने घरों की तथा कपड़ों की सफाई करते हैं। व्यापारी वर्ग इस शुभ दिवस पर पुराने खाते को बन्द कर नया खाता खोलता है। मान्यता है कि धन की देवी श्री लक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती हैं और अलौकिक गृहों को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं। अपने भाग्य की परीक्षा लेने के लिए लोग जुआ भी खेलते हैं। रात्रि के अन्तिम प्रहर में माताएं सूप की कर्कश ध्वनि से दरिद्रता को निकालती हैं तथा गाँव के बाहर सामूहिक रूप से उसे जला देती हैं।

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जला कर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गयी हैं? जलते हुए दीप उनको आकृष्ट क्यों नहीं कर पाते? वे कौन-सा दीप जलाना चाहती हैं? वस्तुत: आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अन्तरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्म-दीप प्रज्वलित कर कमल पुष्प सदृश अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी के दीप जला कर बच्चों का खेल खेलते रहते हैं। मन-मन्दिर की सफाई करने की जगह बाह्य सफाई से ही हम खुश हो जाते हैं। तभी तो श्री लक्ष्मी हमसे रूठ गयी हैं। कमल सदृश बन कर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतुर्दिक घोर अज्ञान अन्धकार छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है। मत-मतान्तर के जाल में मानव-मात्र भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता शिव सर्वात्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भांति इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और प्राय:लोप गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन उस सदा जागती

शेष पृष्ठ 32 पर

अमृत-सूची

- शुभ भावना, शुभ कामना दिवस (सम्पादकीय) 2
- बुद्धि रूपी झोली विशाल बनायें 4
- नशे के नाश का दृढ़ संकल्प... 6
- कैसे मनाएं दीवाली? (कविता) 8
- 'पत्र' सम्पादक के नाम 9
- खेल – एक शक्ति 10
- सकारात्मक जागृति 11
- त्यागी कौन? 12
- न मिटने वाली भूख 13
- सच्चाई की ओर चलें (कविता) 13
- अन्तर में झाँकिए, शक्तियाँ पाइये 14
- सचित्र सेवा समाचार 15
- ईश्वर में तन्मयता 18
- जिम्मेवारी 18
- सत्यता की शक्ति 19
- मानव मात्र की तीन श्रेणियाँ 22
- व्यवहार 22
- ऐसा ज्ञान कहीं नहीं मिला...... 23
- साहस जहाँ सफलता वहाँ...... 24
- खुशियाँ बाँटो (कविता)........ 26
- पुरुषोत्तम संगमयुग और....... 27
- स्वर्णिम युग.................... 29

**

सम्पादकीय ....

शुभ भावना, शुभ कामना दिवस

देश तथा विदेश में, आजकल विभिन्न प्रकार के दिन मनाने का प्रचलन काफी बढ़ गया है। कभी माँ दिवस, कभी पिता दिवस, कभी मित्र दिवस, कभी परिवार दिवस, कभी श्रमिक दिवस, कभी पर्यटन दिवस, कभी जन्तु- कल्याण दिवस, कभी सूचना दिवस आदि अनेक प्रकार के दिवस विभिन्न निश्चित तिथियों पर हर वर्ष मनाए जाते हैं। इन दिनों को मनाने का एक तो फायदा यह होता है कि सम्बन्धित विषय की तरफ सरकार तथा गैर सरकारी संस्थानों, व्यक्तियों का ध्यान आकृष्ट होता है, उनके महत्त्व के प्रति जागृति आती है, उन-उन क्षेत्रों में जो कमियाँ व्याप्त हैं, उनके कारणों और निवारणों पर सामूहिक चर्चा होती है। उनमें सुधार लाने के लिए कई योजनाएं भी उस दिन से प्रारम्भ कर दी जाती हैं। तन, मन, धन का सहयोग भी उन-उन क्षेत्रों के उत्थान और परिष्कार के लिए जुटाया जाता है। इस प्रकार समस्याओं के समन्दर बने इस संसार में, समाधान रूपी थोड़ी हलचल इन विशेष दिनों को आधार बनाकर अवश्य प्रारम्भ होती है।

लेकिन ध्यान देने योग्य बात यह है कि दीवाली के दीपकों की तरह इन विशेष दिवसों पर दी जाने वाली जागृति का प्रकाश भी एक दिन ही चकाचौंध देता है। संचार के विभिन्न माध्यमों के द्वारा एक दिन तो कई प्रकार की सामग्री प्रस्तुत कर दी जाती है परन्तु उस दिन के बीतते ही वह क्षेत्र अधिकतर पुन: विस्मृति की गर्त में चला जाता है और अगले वर्ष का निश्चित दिवस आने तक उस क्षेत्र की समस्याएं कई गुणा नहीं तो द्विगुणित तो अवश्य हो ही जाती हैं। उदाहरण के लिए महिला दिवस मनाए जाते हैं फिर भी महिला-उत्पीड़न, हिंसा, बलात्कार, दहेज, भ्रूण-हत्या, पारिवारिक कलह आदि के मामले हर वर्ष बढ़ते ही जा रहे हैं। इसी प्रकार बाल दिवस मनाया जाता है परन्तु बाल अपराध, बाल मजदूरी, बाल शोषण, बाल कुपोषण, बाल मृत्यु आदि समस्याएं हर वर्ष अपना मुँह दोगुने-तिगुने रूप में फैला लेती हैं। ऐसा ही अन्य क्षेत्रों के बारे में भी कहा जा सकता है।

यहाँ हमारे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि ये दिवस ना मनाए जाएँ। ''कुछ भी नहीं'' से ''कुछ'' और ''कभी नहीं'' के बदले ''कभी-कभी'' किए गए प्रयास बहुत अच्छी बात है परन्तु हम तो इस निष्कर्ष पर पहुँचना चाहते हैं कि ऐसी क्या विधि अपनाई जाए, ऐसा कौन-सा नुस्खा लागू किया जाए, ऐसी कौन-सी जादू की छड़ी घुमाई जाए जो सारी समस्याएँ, सब क्षेत्रों की समस्याएँ एक ही तरीके से सुलझ जाएँ और सदाकाल के लिए सुलझ जाएँ। ऊपर हमने जो जादू की छड़ी का जिक्र किया उससे आप यह न समझ लें कि सचमुच हमारे पास ऐसी कोई छड़ी है जिसको घुमाने भर से सब बातें छू-मन्तर हो जाएँ। समस्याएँ न तो जादू की छड़ी घुमाने से निर्मित हुई हैं, न ऐसी छड़ी कोई होती है, न उसके घुमाने से मिटती हैं। समस्याएँ जिस तरीके से निर्मित होती हैं, उसी तरीके से मिटाई जाती हैं। यदि लकीर हाथों से खींची जाती है तो हाथों से मिटाई जाती है। गड्ढे शारीरिक मेहनत से खोदे जाते हैं तो शारीरिक श्रम से ही उनको भरा भी जाता है। इसी प्रकार **संसार की जितनी भी प्रकार की समस्याएँ हैं वे मानव मन से उत्पन्न हुई हैं और मानवीय मन को सुमन बनाकर उनको मिटाया भी जा सकता है।**

आज मानव मन में शुभ कामना, शुभ भावना और दुआ की शीतल बयार के स्थान पर निरन्तर काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों का और बद्दुआओं का धुआँ उठता रहता है। जैसे शीतल सुगन्धित बयार वातावरण को सुखदाई बनाती है वैसे यह मानसिक धुआँ वातावरण में सूक्ष्म प्रदूषण फैला रहा है। जिस प्रकार धुएँ के कारण व्यक्ति को व्यक्ति दिखाई नहीं देता उसी प्रकार इस बद्दुआओं के धुएँ ने मानवीय रिश्तों की पहचान को धूमिल कर दिया है। मानव दूसरे मानव के साथ शुद्ध, स्वच्छ रिश्तों को समझना और निभाना भूल गया है। धूमिल वातावरण में मानव ने एक-दो के शोषण और दोहन का घातक रास्ता अपना लिया है। प्रकृति के हर तत्त्व को भी इस मानवीय वृत्ति ने अपनी चपेट में ले लिया है इसलिए प्राकृतिक तत्त्वों की शुद्धि के लिए भी हमें जल दिवस, पृथ्वी दिवस आदि मनाने की आज आवश्यकता पड़ रही है। कलियुग की कलुषित वृत्तियों ने मानवीय रिश्तों की गरिमा को इस कदर मिटा दिया है कि जीवनदायी सम्बन्धों के महत्त्व को याद करने के लिए माँ दिवस, पिता दिवस, मित्र दिवस आदि-आदि मनाने पड़ते हैं।

परन्तु अब इस सृष्टि का रक्षक, पालनहार, मार्गदर्शक, सनातन शुभचिन्तक और परम कल्याणकारी पिता सृष्टि पर अवतरित होकर हमें ऐसा दिवस मनाने के लिए कह रहा है, जिसको मनाने से हर क्षेत्र की हर समस्या सहज सुलझ सकती है। **भगवान कहते हैं कि हे मेरे लाडले बच्चे! वर्तमान समय कलियुग का अन्त और सतयुग की आदि का कल्याणकारी संगम है। इस संगमयुग में, जो कि बहुत कम अवधि का है, आप हर दिन को ''थैंक्स डे'' के रूप में मनाओ अर्थात् ''धन्यवाद दिवस'' अथवा ''शुभ भावना, शुभ कामना दिवस'' के रूप में मनाओ। सदा एक-दो को शुभ भावना, शुभ कामना देते रहो।** यह सारा संगमयुग, 5000 वर्ष के कल्प की भेंट में एक दिन के समान ही है। अतः इस संगमयुग रूपी थैंक्स डे अथवा शुभ कामना दिवस के अनुरूप हर आत्मा दूसरे के गुणों को देखे, विशेषताओं को देखे, दूसरे की अच्छाइयों का ब्यौरा निकाले और इस प्रकार शुभ कामनाओं के, धन्यवाद की वृत्ति, दृष्टि और कृति के गुलदस्ते एक-दो को भेंट करे तो सारा संसार खुशनुमा बन जाएगा। **एक समय था जब इस सम्पूर्ण सृष्टि पर सदा ही ''शुभ भावना, शुभ कामना दिवस'' साकार रूप में था। वह समय था स्वर्णिम युग का, स्वर्ग का। उसमें मानव तो क्या पशु-प्राणी भी एक-दो के प्रति सद्भावना से रहते थे। तभी तो गायन है कि स्वर्ग में शेर-गाय भी एक घाट पर पानी पीते थे।**

परमपिता परमात्मा शिव ने साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर खास भारत और आम सारी दुनिया को यह खुशखबरी सुनाई है कि हे मेरे प्यारे वत्सो! शुभ भावना, शुभ कामना दिवस नित्य प्रति मनाते-मनाते आप पुनः उस प्यारे स्वर्णिम युग को सृष्टि पर साकार कर लेंगे। अतः **आप एक-दो को शुभ भावना, शुभ कामना दिवस की नित्य बधाई दो, एक-दो को दिलखुश मिठाई खिलाओ, एक-दो को आत्मिक स्नेह रूपी शहनाई सुनाओ और अशुभ की सदाकाल की विदाई का महोत्सव मनाओ।**

आप सभी को 'शुभ भावना, शुभ कामना दिवस' अथवा युग के उपलक्ष्य में दिल की स्नेह भरी शुभ कामनाएँ और मंगल कामनाएँ अर्पित हैं।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

✧✧✧

आपको कोई अच्छा दे या बुरा, आप सबको स्नेह दो, सहयोग दो, रहम करो

बुद्धि रूपी झोली विशाल बनायें

साऊथ गुजरात युनिवर्सिटी, सूरत के उप-कुलपति श्री प्रेमकुमार शारडा

मैं सामाजिक कार्यक्षेत्र में अनेक संस्थाओं में गया हूँ। मैंने भक्ति भी की है लेकिन यहाँ (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित मुख्यालय में) विशेष बात यह लगी कि वातावरण में स्वच्छता, पवित्रता दिखाई देती है। व्यक्तियों के चेहरों पर सरलता, सौम्यता, एक अनोखा सौंदर्य, संतोष एवं प्रफुल्लता है। यह सारी चीज़ें इतने ज्यादा लोगों में मैंने एक साथ कभी नहीं देखी। वैसे संसार में भी कई लोग होते हैं जो खुश रहते हैं लेकिन यहाँ मैंने देखा कि दादी जी से लेकर जो छोटे-से-छोटे कर्मचारी हैं, चालक हैं या कमरे में मुझे चाय आदि देने वाले हैं, हरेक प्रसन्नता और अपनेपन से सेवा करते हैं, उनमें ज़रा भी बनावटीपन नहीं है, मन से करते हैं। मैंने गीता में कभी पढ़ा था – 'कर्म करो फल की आशा नहीं रखो', वह यहाँ प्रत्यक्ष देख कर लगता है कि हर व्यक्ति हर कार्य भगवान को अर्पण करके कर रहा है। इस तरह के विचार पूरे-के-पूरे संगठन में हों, यह बहुत ही अच्छा लगा।

मैं दो वर्ष पहले भी एक सम्मेलन में भाग लेने यहाँ आया था, इसके बीच में यदाकदा संस्था के सम्पर्क में रहा हूँ। हज़ारों व्यक्तियों पर राजयोग के अभ्यास का इतना अच्छा असर होता है कि आज के तनावपूर्ण वातावरण में भी उनके चेहरे पर प्रसन्नता, प्रफुल्लता दिखाई देती है, आत्मसंतोष की भावना दिखाई देती है। काम चाहे छोटा कर रहे हों या बड़ा, निष्ठापूर्वक कुशलता से कर रहे हैं, यह एक विशेष बात है। आचार्य तुलसी जी से किसी ने पूछा– आजकल की तकलीफें क्या हैं? उन्होंने कहा था – समस्याएँ हैं भ्रष्टाचार, निराशा, बेरोजगारी, गरीबी आदि लेकिन सबसे ज्यादा जो कमी है वह है आस्था की कमी। चाहे वह स्वयं में आस्था की कमी या दूसरों में। लेकिन यहाँ मैंने देखा कि राजयोग के अभ्यास के कारण छोटे-से-छोटा व्यक्ति भी अपने में आस्था रखता है, यह आस्था अगर आजकल के नौजवानों में, विद्यार्थियों में, शिक्षकों में, डॉक्टर्स एवं इंजीनियर्स में आ जाए तो पूरे समाज का कायाकल्प हो सकता है, इसमें मुझे संदेह नहीं लगता है।

जब मैं सेंट जेवियर स्कूल में पढ़ता था तो हमारे यहाँ एक नैतिक विज्ञान का विषय होता था। लेकिन मैंने देखा कि जो विद्यार्थी नैतिक विज्ञान में सबसे ऊँचे मार्क्स लेता है वह व्यक्तिगत मूल्यों में भी सबसे अच्छा हो, ऐसा ज़रूरी नहीं था। लेकिन यहाँ पर मैंने देखा कि इस शिक्षा से व्यक्तिगत तौर पर परिवर्तन आता है। मैंने अपनी युनिवर्सिटी में पिछले साल एक प्रमाण-पत्र कोर्स ब्रह्माकुमारी संस्था से मिल कर लागू किया था। यह कोर्स हमारे मानव संसाधन विकास विभाग के श्रमिक कल्याण के कार्यक्रम के लिए और हमारे शिक्षा विभाग में एम.एड. के विद्यार्थियों के लिए था जिसका काफी अच्छा प्रभाव पड़ा। अच्छी बात तो यह है कि नौजवानों पर इसका प्रभाव ज्यादा पड़ रहा है। सन् 1996-97 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'इक्कीसवीं सदी' के लिए उच्च शिक्षा पर एक निर्णय लिया था। उन्हें पता था कि तकनीकी विकास हो रहा है आई.टी. एरिया के कारण, बायोटेक्नालॉजी के कारण। कृषि क्षेत्र में, फिजिक्स में, स्पेस टेक्नालॉजी में, ओसोनोग्राफी में तथा अन्य कई क्षेत्रों में जबरदस्त काम हो रहे हैं। लेकिन उन्होंने कहा - भविष्य की शिक्षा चौथे स्तम्भ पर टिकेगी, इस चौथे स्तम्भ के चार पहलू हैं। **एक** – लर्निंग टू नो अर्थात् जानकारी, **दूसरा** – लर्निंग टू

डू अर्थात् ज्ञान और कार्य के बीच की दूरी कम हो, **तीसरा** – लर्निंग टू लीव टुगेदर अर्थात् आपस में सहकार की भावना आवश्यक है और **चौथा** – लर्निंग टू बी अर्थात् हम मानव के रूप में क्या हैं? मानव के रूप में जो श्रेष्ठतम् है चाहे हम सेल्फ एक्चुलाइजेशन (स्वयं की वास्तविकता) कहें या हम कहें नर से श्री नारायण बनने की बात। इन बातों को युनेस्को ने तो सिर्फ कहा लेकिन मैंने आचरण में लाने का कार्य या उस प्रकार से स्वयं को ढालने का कार्य यहाँ पर ही देखा। मैं मानता हूँ कि यह शिक्षा विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पढ़ाना बहुत ज़रूरी है। इससे काफी फर्क पड़ेगा लोगों की प्रभाव डालने की शक्ति में, कार्यक्षमता में। अहंकार की भावना दूर होगी। एक सकारात्मक भावना आयेगी। दिमाग के अंदर जो मकड़ी के जाले की तरह विचार घूमते रहते हैं उनमें स्पष्टता आयेगी और इससे जबरदस्त क्रांति जैसा काम होगा।

यहाँ मैंने बहुत विशेषताएँ देखी हैं और अन्य संस्थाओं से भिन्नता अनुभव की है। एक तो यहाँ दृढ़ता है। औपचारिकता नहीं हो रही है। सभी स्तरों पर दृढ़ता से कार्ययोजना का पालन हो रहा है। जो परिवर्तन है वो शब्दों एवं भाषणों तक ही सीमित न होकर सुव्यवस्थित ढंग से मन पर कार्य कर रहा है, यह बहुत बड़ी विशेषता यहाँ दिख रही है। सफलता तो इस बात पर भी निर्भर करेगी कि जो व्यक्ति यहाँ आया है वह अपना कैसा भूतकाल लेकर आया, कैसी संस्कृति लेकर आया है। कार्यक्रम में भाग ले रहे पन्द्रह सौ लोगों में सभी लोग एक ही तरह से बदल कर नहीं जायेंगे, कोई पाँच प्रतिशत तो कोई पचास प्रतिशत बदलेगा। लेकिन यहाँ का माहौल ऐसा है जो ज्यादा-से-ज्यादा लोगों में बदलाव आयेगा। माहौल ऐसा है, कार्य करने का ढंग ऐसा है कि जिसमें सफलता के अवसर ज्यादा हैं।

यहाँ की शिक्षा से मैं समझ पाया हूँ कि हम सभी परमात्मा के पुत्र हैं, हम मूल रूप से दिव्य हैं। परमात्मा का जो कुछ है वह हमारा है। परमात्मा पिता की जो शक्तियाँ हैं, जो उनमें करुणा का भाव है, जो उनका देने का भाव है, जो उनका प्रेम का भाव है, तो उनके पुत्र और पुत्रियाँ होने के कारण हमारा उन पर अधिकार है। हमें इस स्मृति के द्वारा उन गुणों को स्वयं के अंतर में जागृत करना चाहिए। जिन तक यह संदेश पहुँचेगा और जो उस पर अमल करेंगे उन पर ज़रूर असर होगा। उनका अपना देवत्व ज़रूर जागेगा, ऐसा मुझे लगता है। विश्व में कई चीज़ें अपने हाथ में होती हैं, कई अपने हाथ में नहीं होती। अगर संस्था कहती है कि कलियुग और आने वाले सतयुग का यह संक्रमणकाल है और इसमें अभी परिवर्तन होने वाला है तो यह (ब्रह्माकुमारी बहनें) मुझसे ज्यादा जानती हैं क्योंकि इनका अध्ययन बहुत गहरा है। जहाँ-जहाँ यह संदेश पहुँचता है, जहाँ विवेक जागृत होता है, जहाँ अपने को ईश्वर का पुत्र या पुत्री कहने की आस्था जागृत होती है, वहाँ-वहाँ जीवन में अवश्य दिव्यता आयेगी।

हम अपने विश्वविद्यालय में भी यहाँ की मूल्यनिष्ठ शिक्षा का डिप्लोमा कोर्स अवश्य शामिल करेंगे तथा परिसर में एक योग-कक्ष बनाया जायेगा ताकि सभी शिक्षक एवं विद्यार्थीगण राजयोग से लाभान्वित हो सकें। हम ईश्वर के पुत्र हैं, पुत्रियाँ हैं, ईश्वर हमें देना चाहता है, हम अपने में लेने की क्षमता पैदा करें। क्योंकि अगर हमारी झोली ही फटी होगी तो जो मिलेगा वह भी नीचे गिर जायेगा और झोली छोटी हुई तो उसमें आयेगा नहीं, तो अपनी झोली बड़ी करें, अपनी शक्ति बढ़ायें। राजयोग का माध्यम तो बहुत सरल है। मैं सुबह 4.00 बजे ब्रह्ममुहूर्त में योग में बैठा। उसके बाद 6.30 बजे वाले सत्र में भी बैठा तो मुझे लगा कि कोई कठिन काम नहीं है और सभी के द्वारा सहज ही किया जा सकता है। दस साल के बच्चे से लेकर वृद्ध तक सभी राजयोग का अभ्यास कर सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि सभी इसका लाभ लें और अपने अंदर जो सुषुप्त शक्तियाँ हैं उन्हें जागृत करें। **शिव बाबा ने कहा है कि ईश्वरीय वर्सा हमारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है तो उस अधिकार को प्राप्त करें। अधिकार के रूप में प्राप्त करें, भीख माँगने की ज़रूरत नहीं है। अपना व्यक्तित्व मजबूत करें, विजय सामने खड़ी है।** ❧❧

नशे के नाश का दृढ़ संकल्प करें

– ब्रह्माकुमार सुरेश, उस्मानाबाद

वर्तमान युग को विज्ञान युग, कम्प्यूटर युग कहने के साथ-साथ तनाव-युग कहना कोई गलत नहीं है। आज घर-घर में बढ़ रहा है तनाव का ज्वर। सुख प्राप्ति के लिए मानव नए-नए खर्चीले अनुसन्धान निरन्तर कर रहा है परन्तु इतना अपार खर्चा करके उसने खरीदा है केवल तनाव। छोटे बच्चे से लेकर बुज़ुर्ग तक, निर्धन से लेकर धनवान तक सभी तनाव के अधीन हैं। जो संबंध स्नेह के आधार पर टिके हुए थे उनमें स्वार्थ वृत्ति ने प्रवेश कर लिया है। जिधर देखो हर चेहरे पर तनाव की रेखाएँ दिखाई देती हैं। किसी को पैसे के अभाव का तनाव, किसी को अधिक पैसा होने का तनाव, किसी को कुर्सी पर बैठने से तनाव, किसी को कुर्सी के न मिलने से तनाव, किसी को प्रशासन चलाने का तनाव, जिधर देखो तनी हैं भौंहें।

तनाव एक महामारी (epidemic) की तरह फैल रहा है। तनाव को दूर करने के लिए या क्षणभंगुर आनन्द के लिए प्रयोग में लाई जा रही हैं नशीली चीज़ें जो समाधान तो दे ही नहीं सकतीं, और ही आधुनिक समाज की ज्वलंत समस्या अवश्य बन गई हैं। इस समय भारत में 15 लाख से भी अधिक ब्राउन शुगर के व्यसनी हैं। इसने लाखों युवकों की रचनात्मक व क्रियात्मक शक्ति को नष्ट कर दिया है। तम्बाकू, शराब, सिगरेट, मॉर्फिन, अफीम, भांग, नींद की गोलियाँ आदि दुर्व्यसन व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से नष्ट कर रहे हैं। ये व्यसन अनेक प्रकार के लाईलाज (incurable) रोगों से भी अधिक खतरनाक हैं। अन्य रोगों से एक व्यक्ति मर सकता है परन्तु दुर्व्यसनों से व्यक्ति स्वयं तो मरता ही है, मित्र व संबंधियों के लिए भी कष्टों का कारण बनता है। मादक द्रव्यों से आनन्द की अनुभूति केवल क्षणिक होती है। बहुत थोड़े समय में ही सब कुछ दु:ख एवं पीड़ा में परिवर्तित हो जाता है और फिर अगली खुराक की इच्छा होने लगती है। इस भूख को शान्त करने के लिए झूठ, ठगी, चोरी शुरू होती है। व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र विरोधी अनेक कार्य करने लगता है। कुछ किस्सों में समाज विरोधी कार्य कराने के लिए अवयस्कों को भी शिकार बनाया जाता है।

मनोरोग चिकित्सकों के द्वारा इन व्यसनों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के निदानों के बावजूद केवल 10, 20 प्रतिशत लोग ही, स्वयं को नष्ट करने वाली इन आदतों से छुटकारा पा सकते हैं। किसी-न-किसी कारणवश 80, 90 प्रतिशत व्यक्ति फिर से व्यसनों के चंगुल में फँस जाते हैं। विशेषज्ञ महसूस करते हैं कि निकट भविष्य में विद्यालय जाने वाले हर बच्चे पर कम-से-कम एक बार नशीली चीज़ों के लिए दबाव डाला जाएगा इसीलिए नशीली चीज़ों से होने वाले नुकसान के बारे में

जानकारी देना अति आवश्यक है। दुर्व्यसनों की समस्या की पूर्ण जानकारी तथा नशे से मुक्ति देने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की भगिनी संस्था राजयोग शिक्षा तथा शोध संस्थान के मेडिकल प्रभाग द्वारा एक आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का निर्माण किया गया है। साथ-साथ ग्लोबल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर, माऊण्ट आबू द्वारा होम्योपैथिक औषधि का निर्माण भी किया गया है जिसका सेवन करने से आज तक भारत में लाखों लोग व्यसनों से मुक्त हुए हैं। ऐसे व्यक्तियों का मनोबल बढ़ाने हेतु ब्रह्माकुमारी संस्थान के द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग बहुत ही प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रहा है। आइए, एक नजर डालते हैं इन नशीली चीज़ों की संक्षिप्त जानकारी पर –

तम्बाकू, गुटखा, सिगरेट, बीड़ी, पान मसाला – तम्बाकू उत्पादन करने में हमारे देश का दुनिया में तीसरा स्थान है। एक वर्ष में 41 करोड़ किलो तम्बाकू की यहाँ उपलब्धि है जो गुटखा, सिगरेट, बीड़ी, हुक्का आदि में प्रयोग होता है। तम्बाकू में 400 प्रकार से भी ज्यादा हानिकारक रसायन होते हैं जिनमें से 40 पदार्थ कैन्सर को जन्म देने वाले होते हैं। एक सिगरेट जीवन की 5 मिनट आयु कम कर देता है। मुँह से लेकर लीवर, गुर्दे तक का कैन्सर तम्बाकू से हो सकता है। इसी से बना हुआ गुटखा आज सब तरफ प्रचलन में है। टाटा मेमोरियल कैन्सर हॉस्पिटल से प्रकाशित साहित्य से यह पता चला है कि कैन्सर का उपचार करने के लिए हर पाँच वर्ष में भारत सरकार के एक हजार करोड़ रुपये खर्च होते हैं। इसका मतलब है कि तम्बाकू बेचे जाने पर जितना मुनाफा होता है उससे कई गुणा ज्यादा खर्च तम्बाकू से होने वाले रोगों को ठीक करने के लिए होता है। तम्बाकू में सबसे ज्यादा हानिकारक रसायन होता है निकोटिन जिसे धीमा जहर कहा जाता है। क्या तम्बाकू उत्पाद तैयार करने वाली तथा विज्ञापन करने वाली कम्पनियाँ इनसे होने वाले रोगों को ठीक करने के लिए खर्चा वहन करने को तैयार हैं? निश्चित रूप से इसका जवाब नकारात्मक ही होगा।

शराब से सर्वनाश – आज इस चीज ने हमारे देश में जितना आतंक फैलाया है, जितने घरों को नष्ट किया है उतना शायद ही बाहर के आतंकवादियों ने किया हो। गरीब हो या साहूकार, ऐसा एक भी इन्सान नहीं जो इसका सेवन करके अमरपद को प्राप्त हुआ हो। आज की तनावग्रस्त स्थितियों से मुक्त होने के लिए इसका सेवन तो किया जाता है लेकिन इसकी लत को छुड़ाना वैसी ही बात है जैसे कि यमराज से किसी आत्मा को वापिस लाना। क्लबों, पार्टियों में, बड़े-बड़े होटलों में लाखों रुपया बहा कर इस जहर को गले उतारने वाली आधुनिक भीड़ इसके दुष्परिणामों से अनभिज्ञ है। लगभग 70 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएँ शराब से प्रभावित लोगों से होती हैं। शराब मस्तिष्क पर प्रभाव डाल कर न्युरासिस जैसी बीमारी को जन्म देती है। लीवर पर प्रभाव डाल कर सिरोसिस जैसी भयानक बीमारी को जन्म देती है जिससे लीवर फूटने की नौबत आ जाती है। धीर-धीरे यह इन्सान को खोखला करती जाती है। समाज से उसकी इज्जत नष्ट हो जाती है। मित्र, परिवार, समाज आदि को दुःखी करके, स्वयं पर अत्याचार करके, पीड़ा देकर शराबी एक दिन असमय ही दुनिया से विदाई ले लेता है।

अफीम, चरस, भांग, मार्फिन एवं हेरोईन – इन चीज़ों की भारत जैसे गरीब देशों में तस्करी दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। जाने-माने खिलाड़ी तथा अन्य हस्तियाँ भी इनको लेने से आज वंचित नहीं हैं। इनका सेवन करने से एक बार तो इन्सान को लगता है कि वह स्वर्ग की दुनिया

में सैर कर रहा है लेकिन असर कम होते ही दूसरी खुराक न मिलने पर नर्क जैसी यातनाएँ भी उसे झेलनी पड़ती हैं। इनसे छुटकारा पाना काफी मुश्किल हो जाता है।

सुजान पाठकगण से नम्र निवेदन है कि यदि वे खुद को भारत का शिक्षित नागरिक समझते हैं और अपने देश और समाज से प्रेम करते हैं, तो व्यसनों से ग्रसित अपने भाई-बहनों को पहचान कर उन्हें छुटकारा दिलाने का भरसक प्रयास करें। सरकार ने कई कड़े कानून बनाए हैं लेकिन पर्याप्त नहीं हैं। सरकार नशीली चीजों की तस्करी, उत्पादन तथा विज्ञापन पर पूरी तरह पाबंदी लगा दे ताकि ये चीज़ें उपलब्ध हों ही नहीं।

हज़ारों लोगों का अनुभव है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सिखाए जा रहे राजयोग की मदद से, अभ्यास से लाखों लोग व्यसनों से मुक्त हुए हैं। राजयोग से मन शान्त रहता है। मनोबल में वृद्धि होती है। सहनशीलता बढ़ती है। आत्मा शुद्ध बनने से व्यसनों से छुटकारा मिलता है इसलिए इच्छुक जिज्ञासुओं से नम्र निवेदन है कि नजदीक के ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय में जाकर राजयोग की शिक्षा निःशुल्क प्राप्त करें। आइए, सब मिल कर व्यसन मुक्ति का दृढ़ संकल्प करें। हिम्मत हमारी, मदद भगवान की। डाक्टर तो केवल निमित्त मात्र है इसलिए स्वयं ही प्रतिज्ञा कीजिए कि हम भारत में जन-जन को व्यसनमुक्त बनायेंगे, स्वर्ग धरा पर लायेंगे, एक नया इतिहास लिखेंगे। ❑❑

कैसे मनाएं दीवाली?

कैसे मनाएं दीवाली साथियो, रावण अभी तक जिंदा है।
पांच विकार भरे देही में, इससे ही शर्मिन्दा हैं।।

काम विकार-सी मालूम होती, काली रात दीवाली की।
क्रोध विकार की भड़की अग्नि उसने गगरी खाली की।।

इनसे बचकर रहना भाई, ये ही हममें जिंदा हैं।
पांच विकार भरे देही में, इससे ही शर्मिन्दा हैं।।

लोभ से होता लाभ नहीं, भले ही बन जाते करोड़पति।
मोह-माया के जाल में फँसकर, बन जाते फिर रोड़पति।।

अहंकार से अहंकारी की हो जाती है भ्रष्टमति।
जो इनके चक्कर में आते, होती उनकी दुर्गति।।

इनसे पालो तुम छुटकारा, होती नहीं फिर निंदा है।
पांच विकार भरे देही में, इससे ही शर्मिन्दा हैं।।

तेल-दीप हर वर्ष जलाए, फिर भी ज्यों का त्यों अंधियारा।
मन का दीप जलाओ तो फिर, फैले जीवन में उजियारा।।

शिव शमा बनकर जलते हैं, फिदा हर एक परिंदा है।
पांच विकार भरे देही में, इससे ही शर्मिन्दा हैं।।

– ब्रह्माकुमार बगदीराम मदेल, रतलाम (म.प्र)

'पत्र' सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत मासिक सचमुच प्यासे को अमृत पिलाने का काम करती है। मेरी सहयोगी अध्यापिका ने सितम्बर 04 की पत्रिका मुझे दी और उसे दिल से पढ़ने के बाद मैंने उपरोक्त अनुभव किया। इससे पूर्व मैंने बहुत सारी कीमती किताबें पढ़ी मगर इस एक ही छोटी-सी पत्रिका ने मुझे आत्मिक समाधान दिया। मेरी ज्ञान की प्यास अब और भी बढ़ती जा रही है जो कि स्वयं और मेरे छात्रों के दृष्टिकोण से बहुत ही फायदेमंद है। 'समय की पुकार', 'गुरु-शिष्य परम्परा की लाज रखिए', 'दिव्य अनुभूतियों की दास्तान' ऐसे बहुत सारे लेख हृदय को स्पर्श कर गए।

– ब्रह्माकुमार रुस्तम होनाले, नांदुरा (महाराष्ट्र)

ज्ञानामृत के सम्पादकीय लेखों को पढ़कर इतना आनंद मिलता है कि क्या कहूँ! मन रम-सा जाता है। न जाने कितनी पत्रिकायें पढ़ी पर सच्चा आनंद आज तक नहीं मिला। आपके समझाने का ढंग, शैली काफी सरल है। दो वर्षों से इस ज्ञानामृत पत्रिका से जुड़ा हूँ। पछता रहा हूँ कि इतने दिन क्या करता रहा? इस पत्रिका की राह देखता रहता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद है आपको। अन्य भाई-बहनों के लेख भी कम नहीं हैं। उनका भी हार्दिक धन्यवाद।

– ब्रह्माकुमार राज, अवंति विहार (रायपुर)

ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने की एक ललक रहती है। सुंदर मुखपृष्ठ, सुन्दर कागज, मनभावन मुद्रण प्रशंसनीय है। प्रत्येक लेख में से बहुत कुछ जानने को, समझने को मिलता है। विभिन्न प्रकार की कविताएँ पढ़ने को मिलती हैं। तस्वीर-सजावट से भी अच्छी सेवा होती रहती है। मैं कई आत्माओं को ज्ञानामृत पढ़ाकर बाबा का संदेश पहुँचाने की सेवा कर रहा हूँ। कोई अंक रद्दी में न जाए, यही सबसे प्रार्थना है। संजय की कलम से...और संपादकीय बहुत कुछ कह जाते हैं। बीच-बीच में लाल स्याही के प्रयोग से काफी उठाव आता है। यह पत्रिका हर परिवार तक पहुँचे, यही समय की पुकार है। हर आत्मा को यह पत्रिका पढ़नी-समझनी चाहिए। आजीवन सदस्यों की संख्या बढ़नी चाहिए। जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं उन्हें आजीवन सदस्य बनना चाहिए। ग्राहक-वाचक बनाने का अभियान चलाना चाहिए।

–ब्रह्माकुमार तुलसीदास, धानेरा (गुजरात)

सितंबर 04 की ज्ञानामृत पत्रिका में ''परचिन्तन छोड़ आत्मचिंतन कीजिए'' – यह लेख मुझे बहुत ही पसंद आया। लेख पढ़कर आदमी को आदमी किस तरह बनना चाहिये, इसका अहसास होता है। आज का आदमी,आदमी नहीं रहा। जो अधम कृत्य अपने हाथ द्वारा करता है उसी का नाम कलियुगी आदमी है। लेख में जो संदेश दिया है, वह संदेश सभी मनुष्य-मात्र के प्रति कल्याणकारी है। सभी आत्मायें अगर इस संदेश का पालन करें तो नई दुनिया स्थापन होने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।

– ब्रह्माकुमार ज्ञानदेव, गुजरात

अगस्त 04 की ज्ञानामृत का हर लेख दिल को भा गया इसलिए पत्र लिखने से पहले काफी देर सोचता रहा कि विशेष किस लेख की महिमा करूँ।सभी लेख बहुत ही सुन्दर और हर आत्मा के पुरुषार्थ को तेज गति से बढ़ाने के निमित्त हैं। फिर भी विशेषकर, ''खुदा दोस्त का खत'', जो मैंने कम-से-कम 6 बार पढ़ा और ''वह प्यारा-सा सपना'' और ''नजर बदली तो नजारे बदल गये'' अन्दर तक दिल को छू गये। पत्रिका तो जैसे हम आत्माओं के लिए एक संजीवनी बूटी का कार्य कर रही है। पूरा महीना इस पत्रिका का इन्तजार करने के बाद जब मैं इसके हर लेख को 2-2 बार पढ़ने के बाद भी 3 या 4 दिन में खत्म कर लेता हूँ तो सोचता हूँ कि ज्ञानामृत एक बहुत मोटी पुस्तक होती तो कितना मजा आता! फिर भी यह पत्रिका गागर में सागर के समान है। हर समय यही शुभ भावना है कि यह पत्रिका दिन दोगुनी और रात चौगुनी तरक्की करे।

– ब्रह्माकुमार अनिल, केन्द्रीय कारागार, हिसार (हरियाणा)

★★★

खेल – एक शक्ति

– ब्रह्माकुमारी जयश्री, विक्रोली (मुम्बई)

अनेक प्रकार के आनन्द में, खेल द्वारा प्राप्त होने वाले आनन्द की भी अपनी एक अहमियत होती है। इसमें तन-मन को ताजगी और खुशी मिलती है। श्री कृष्ण के जीवन में खेल का असाधारण महत्त्व था, उसी पर भागवत बन गया है। खेलने के निमित्त कितने सारे लोग इकट्ठे हो जाते हैं, चाहे वे खेलने वाले हों या देखने वाले हों। खेलते वक्त खुशी के फुहार उछलते हैं और खिलाड़ी जो समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों से होते हैं, कितनी आसानी से, स्नेह से एक-दूसरे के समीप आते जाते हैं, सहयोगी बन जाते हैं। एक-दूसरे की समस्या को समझते हैं। इसलिए खेल को अब एक शक्ति के रूप में देखा जा रहा है।

कुछ समय पहले खेल के प्रति अलग धारणा थी। पढ़ाई में आने वाली बाधा या समय बर्बाद होने का एक कारण समझा जाता था खेल को। लेकिन आज समय ने खेल और खिलाड़ी को असाधारण महत्त्व दिला दिया है। जैसे ही बच्चों की परीक्षाएँ पूरी हो जाती हैं, वे खेल प्रशिक्षण शिविर में दाखिल हो जाते हैं जिससे कि उनके हुनर को बढ़ावा मिले, तन्दुरुस्ती बढ़े और सामाजिक दृष्टिकोण से आपस में मित्रता बढ़े। अगर कोई खेल में अच्छी खासी उन्नति करता है तो खेल धन कमाने का एक अच्छा साधन भी बन जाता है। वर्तमान समय क्रिकेट का खेल हर क्षेत्र को प्रभावित किए जा रहा है। पहले तो मुहूर्त देख करके कार्य किए जाते थे लेकिन अब क्रिकेट मैच से कार्यों की समय सारिणी बनाई जाती है।

खेल एक शक्ति है और इस शक्ति का प्रयोग सफलतापूर्वक करने के लिए इसके प्रबन्धन के बारे में सोचने का समय आ चुका है। खेल द्वारा खिलाड़ी को जितना अधिक धन, इज्जत, शोहरत मिल रही है, उतनी ही अधिक जिम्मेवारियाँ भी उस पर बढ़ती जा रही हैं। उन जिम्मेवारियों को न समझने के कारण कई खिलाड़ी तनाव के शिकार हो जाते हैं। जो खिलाड़ी ज्यादा हुनर नहीं दिखा पाते हैं वे अपने खेल के भविष्य को लेकर भयभीत भी रहते हैं। इसलिए तरक्की चाहने वाले, चोटी पर पहुँचने की तमन्ना रखने वाले खिलाड़ियों को सफलता हासिल करने के लिए स्थिरबुद्धि और अनुशासित जीवन शैली अवश्य अपनानी चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति में मेडिटेशन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हर खिलाड़ी अब मेडिटेशन का महत्त्व समझता है।

खिलाड़ी जब मैदान में उतरते हैं तब से लेकर उन पर इतने कैमरे लग जाते हैं जो हर पल उनके व्यक्तित्व का आइना बन कर उन्हें करोड़ों के सामने प्रस्तुत करते रहते हैं। अत: खेल के साथ-साथ हर खिलाड़ी के लिए अपने स्थूल और सूक्ष्म व्यक्तित्व का ध्यान रखना भी आवश्यक बन गया है। खिलाड़ियों के जीवन को एक खुली किताब की तरह मीडिया प्रस्तुत करता है, इस वजह से अब उनका चरित्र भी अच्छा होना जरूरी हो गया है। चरित्र के आधार पर खिलाड़ी की जो प्रतिमा बनती है वह देश की इज्जत का एक हिस्सा बन जाती है। इसलिए फिल्म

स्टार्स से भी ज्यादा महत्त्व अब खिलाड़ियों का है।

खिलाड़ी अब अप्रत्यक्ष रीति से राजदूत का भी काम करने लगे हैं। अनेक वर्षों की दुश्मनी से भारत-पाक जनता थक चुकी थी। वातावरण को हल्का करने के लिए क्रिकेट खिलाड़ियों को भेजा गया। आज हम मैत्रीपूर्ण वातावरण देख रहे हैं क्योंकि खेल प्रेम, सुख, आनन्द जैसे आन्तरिक गुणों की अभिव्यक्ति है। पाक जाने से पहले सभी खिलाड़ियों का कलकत्ता में एक "कंडिशनिंग कैम्प" आयोजित किया गया था। उसमें उन्हें खेल की नहीं बल्कि आत्मीयता से व्यवहार करने की ट्रेनिंग कराई गई। एक भी खिलाड़ी अगर गलत बोल बोलता है या कृत्य करता है तो पूरा वातावरण बिगड़ सकता है। अगर कोई खिलाड़ी नियमित रूप से मूल्यनिष्ठ शिक्षा धारण करे तो वह अपना व्यक्तित्व सहज रीति से मूल्यवान बना सकता है। हमने कई ऐसे खिलाड़ी देखे हैं, जिन्होंने धन कमाया लेकिन गलत चरित्र से इज्जत भी गँवाई। देश ने उन्हें माफ नहीं किया। कई खिलाड़ी लापरवाही से या अहंकार में आने की वजह से अपना नुकसान कर बैठे हैं। यहाँ पर आध्यात्मिकता की आवश्यकता समझ में आती है।

जब भारत-चीन के संबंधों में सुधार करने की बात आई तब "पिंग-पाँग नीति" का प्रयोग किया गया। इसके अंतर्गत कमलेश मेहता को चीन में खेलने के लिए भेजा गया और वहाँ उसने अपने देश का बड़ी सभ्यता और प्रेम से प्रतिनिधित्व किया और वहाँ से सुधरे हुए संबंधों की कड़ी शुरू हुई। जो बात बंदूक-तोपों से नहीं होती है वह खेल और खिलाड़ी के मधुर व्यवहार से सहज हो सकती है। कमलेश मेहता स्वयं आध्यात्मिक हैं और योग में रुचि रखने के कारण हर जिम्मेवारी को गहराई से समझ पाते हैं। अत: मूल्यों के समावेश से और खिलाड़ियों के योगस्थ रहने से खेलों की शक्ति कई गुणा बढ़ जाती है।

▲▲▲

सकारात्मक जागृति

– ब्रह्माकुमार सुधीर, भवानीपाटना (उड़ीसा)

संगमयुग के इस सुहावने समय में परमपिता शिव परमात्मा परमधाम से आकर नई दुनिया स्थापन करने के लिए और संसार पर छाई बुराइयों का साम्राज्य खत्म करने के लिए राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। भगवान के इस श्रेष्ठ कार्य में मददगार बनने के लिए हम सभी को आत्मिक रूप से जागने की और दूसरों को जगाने की ज़रूरत है। अपने ही तन-मन-धन के सहयोग से ईश्वरीय कार्य को आगे बढ़ाना है। अब वह समय नहीं रहा कि माया आकर हमारी सुख-शान्ति लूटती रहे और हम भगवान के आगे जाकर भिखारी की तरह भीख माँगते रहें, अब तो स्वयं भगवान आकर हमारे अन्दर शक्तियाँ भर रहे हैं। केवल आवश्यकता है उनकी शिक्षाओं पर अमल करने की। इसी सम्बन्ध में एक प्रेरणादायी कहानी है –

किसी गाँव में प्रतिदिन और रात को भी एक डाकू आता था और गाँव वालों का कीमती सामान लूट कर ले जाता था। इससे गाँव वाले बहुत दु:खी थे। एक दिन एक साधु के आगे उन्होंने अपनी समस्या बताई। साधु ने कहा – "इसके लिए एक यज्ञ करना पड़ेगा। आप में से हरेक को 10-10 रुपये देने पड़ेंगे।" सभी ने खुशी-खुशी 10-10 रुपये दे दिए। साधु रुपये लेकर जंगल में चला गया। कुछ दिन बीत गये। साधु जी फिर आए और गाँव वालों से 15-15 रुपये माँगने लगे और कहा कि अभी तक यज्ञ सम्पन्न नहीं हुआ है। गाँव वालों ने फिर 15-15 रुपये दे दिए। समस्या अभी भी वहीं-की-वहीं थी। कुछ दिन बीते कि साधुजी फिर आ गए और 20-20 रुपये हरेक से माँगने लगे। इस बार गाँव

वाले भड़क उठे, उन्हें लगा कि यह साधु ठगी करके हमारा धन लूट रहा है। सभी ने मिल कर अपने-अपने घरों से लाठियाँ, कुल्हाड़ियाँ आदि निकालीं और साधु को मारने के लिए तैयार हो गए। वे क्रोध में पूछने लगे – "हमारा धन कहाँ रखा है? कहाँ चल रहा है तुम्हारा यज्ञ, कब सम्पन्न होगा, हमें बता, नहीं तो .....।" साधु ने जवाब दिया – "मेरे भाइयो, मेरा यज्ञ अभी, इसी क्षण सम्पन्न हुआ है, मैं इसी समय का इन्तजार कर रहा था कि आप के अन्दर जागृति आए। आज आप लोगों ने अपने धन की सुरक्षा के लिए मेरे खिलाफ जैसा व्यवहार किया, अगर आज रात को वैसा ही व्यवहार उस डाकू के साथ करो तो देखना कैसे समस्या हल होती है।" ऐसा कह कर साधु ने सभी का सारा धन वापस लौटा दिया।

गाँव वालों की आँखें खुल गईं। उनके अन्दर साहस का संचार हुआ। रात को जब डाकू आया तो सभी ने मिल कर उसकी धुनाई कर डाली। डाकू सदा के लिए उस गाँव से दूर चला गया। इस प्रकार, साधु की व्यवहारिक सीख ने ग्रामीणों को अपनी सहायता आप करने के लायक बना दिया।

भगवान शिव कहते हैं – "बच्चे, ये पाँच विकार काम, क्रोध ..... आदि आपके शत्रु हैं, डाकू हैं, ये चुपके से मन में प्रवेश करते हैं और आपको अहसास तक नहीं हो पाता कि इन घुसपैठियों ने मन की सारी शान्ति को, सद्गुणों को कैसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। आप द्वापरयुग से लेकर आज तक इनसे मन को मुक्त करने के लिए मन्दिरों में प्रार्थनाएँ करते रहे, साधु-महात्माओं की शरण में जाते रहे परन्तु लाभ नहीं हुआ। क्योंकि ये विकार मनोबल की कमी, ईश्वर की पहचान और उनसे सच्चे सम्बन्ध की कमी तथा आध्यात्मिक ज्ञान की कमी के कारण मन पर वार करते हैं।" अब भगवान शिव ने इनको मारने की युक्ति बताई है जिसे साकार तो स्वयं ही करना है। इन सभी विकारों का सरताज है देहाभिमान। अपने को देह समझने से ही सभी विकारों की उत्पत्ति होती है। भगवान कहते हैं – "हे वत्स! तू देह को भूल अपने को आत्मा समझ और मुझ ज्योति स्वरूप परमपिता परमात्मा से प्रेम भरा सम्बन्ध जोड़, तो मैं तुझे सभी विकारों से मुक्त कर दूँगा और सतयुग में दो ताज वाला सतोप्रधान बादशाह बना दूँगा।"

★★★

त्यागी कौन?

– ब्रह्माकुमार नरेन्द्र, कायावरोहण (गुजरात)

विश्व रचना है और विश्व-पिता रचयिता है। इस विश्व में रहने, चलने, खाने-पीने, सम्पत्ति एकत्रित करने का अधिकार हर मानव को जन्म के साथ ही बिना मेहनत के मिल जाता है। लोग जन्मजात प्राप्त सांसारिक चीजों में फँस जाते हैं। वे इनके मोह में विश्व-पिता को भूल जाते हैं और उनसे होने वाली सर्वोच्च प्राप्तियों को दुसाध्य समझ उनकी उपेक्षा करते हैं। ऐसे में जब वे किसी त्यागी, तपस्वी, आत्मज्ञानी को देखते हैं तो नतमस्तक होकर सोचते हैं कि पता नहीं इन्होंने कितना त्याग किया होगा, कष्ट सहा होगा, तब जाकर यह अवस्था पाई होगी। परन्तु वास्तव में, ईश्वरीय मार्ग पर चल कर जो भाग्य मिलता है उसके आगे त्याग तो कुछ भी नहीं है। एक बार एक सेठ ने एक संन्यासी को प्रणाम कर कहा– "आप पूजनीय और त्यागी हैं, मैं तो आपके चरणों की धूल भी नहीं हूँ।" संन्यासी ने कहा – "सेठजी, त्यागी तो आप हैं, जो मुट्ठी भर चने समान सम्पत्ति को पकड़े बैठे हैं और जन्म-जन्म के लिए अखुट भाग्य और सुख-चैन देने वाले विश्व-पिता को भूले बैठे हैं, उनसे दूरी बनाए हुए हैं, मैं तो विश्व-पिता की प्यार भरी छत्रछाया में हूँ। तो बताइये त्यागी कौन, मैं या आप?''

आप भी अपने से पूछिए – आप उसकी छत्रछाया में पल रहे हैं या उस सेठ की तरह ....?

★★★

न मिटने वाली भूख

– ब्रह्माकुमार नरेश, पलवल

आज की सरकारें जब भूख से दम तोड़ने वाले लागों के आँकड़े एकत्रित करती हैं तो केवल उन्हीं की गिनती करती हैं जो पेट की आग नहीं बुझा सके। परन्तु एक ऐसी क्षुधा है जो पेट की क्षुधा बुझने पर भी नहीं बुझ पाती है और वह क्षुधा है – धन, पदार्थों, मान-शान और पद की। यह भूख पूरे-के-पूरे साम्राज्यों को, अनेक देशों और नागरिकों को निगल लेने पर भी शान्त नहीं होती। इस भूख से सन्तप्त व्यक्ति रूपी भेड़िए इतिहास में भी हुए हैं और वर्तमान समय भी उनकी पूरी ज़मात है परन्तु विडम्बना यही है कि उनकी गिनती भूखों में नहीं होती। पेट की क्षुधा को शान्त करने के उपाय हो सकते हैं परन्तु इस गुप्त क्षुधा को तृप्त करने के उपायों से यह और ज्यादा भड़क उठती है। जैसा कि राजा सिकन्दर के साथ हुआ।

सिकन्दर विश्व-विजय के अभियान के दौरान जब भारत आया तो एक बार की बात है कि उसे बड़ी भूख लगी थी। रास्ते में एक झोपड़ी और उसमें बैठी वृद्धा को देखा तो अपना परिचय दिया और भोजन के लिए प्रार्थना की। वृद्धा बड़ी समझदार थी। वह अन्दर गई और एक थाली में सोना-चाँदी भर कर राजा सिकन्दर के सामने ले आई । सिकन्दर भूख से बिलबिला रहा था इसलिए उसे गुस्सा आ गया। उसने कहा – "माताजी, मुझे भूख लगी है और भूख की तृप्ति रोटी से होती है, इस सोने-चाँदी की थाली से नहीं।" वृद्धा ने हाथ जोड़ कर कहा – "राजा, खाद्य पदार्थ तो तेरे अपने देश में भी बहुत थे, सच बता, क्या भारत में तुझे पेट की भूख खींच लाई ? नहीं, तू भोजन का भूखा नहीं है, तू हीरे और रत्नों का ही भूखा है और इसलिए इस देश की मिट्टी में मारा-मारा फिर रहा है।" वृद्धा की इस गहरी समझ के आगे राजा का मस्तक झुक गया, उसने खाना खाया और आगे बढ़ गया।

सत्य ही है भूख दो प्रकार की होती है। एक पेट की और दूसरी तृष्णाजनित। यह तृष्णाजनित भूख आज तक किसी की न मिटी है न मिट सकती है। इसे मिटाने के असफल प्रयासों में मानव अपनी शान्ति और चरित्र को मिटा कर स्वयं भी मिट जाता है। इसलिए प्यारे शिव बाबा ने कहा है – "इच्छा-मात्रम्-अविद्या बनो।"

✪ ✪

सच्चाई की ओर चलें

आओ प्रियवर हम-तुम अब तो सच्चाई की ओर चलें।

झूठ-कपट तो बेमानी है, धरम-करम बस सच्चा।
न्याय-नीति को जो अपनाता, केवल वह है अच्छा।।
जहाँ ज्ञान का नूर बिखरता – आओ हम उस भोर चलें।

अंधकार चहुँदिशि है छाया, उजलापन खामोश।
प्रेम-प्यार अब मुरझाया है, द्वेष दिखाता जोश।।
परमपिता से प्रीति जोड़ें – अंतर्मन हो शोर, चलें।

जीवन-सुमन शुष्क है असमय, नव उल्लास तिरोहित।
सूना-उजड़ा उपवन लगता, खुशियाँ हुईं पराजित।।
अपनेपन का अमृत पी लें – नाचे अब मन मोर, चलें।

– प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे, मण्डला

– ब्रह्माकुमारी रामा, पानीपत

मानव के लिए तन, मन और धन की शक्तियाँ जितनी आवश्यक हैं इनसे कई गुणा अधिक आवश्यक हैं आन्तरिक शक्तियाँ। आज के मनुष्य को जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इन्हें पार करते हुए मन शान्त और आनन्दमग्न रहे, यह एक बहुत ऊँची प्राप्ति है। इस प्राप्ति के लिए भीतरी शक्तियों का होना बहुत जरूरी है। कोई भी मानव कर्मक्षेत्र के कर्म को त्याग कर, भगौड़ा बन कर सफल नहीं हो सकता।

यह धारणा गलत है कि हम सहन नहीं कर सकते या समायोजन नहीं कर सकते। इन शक्तियों को महसूस करने की आवश्यकता है। इसके लिए भीतर की ओर जाना होगा। भीतर जाए बिना बेहतर नहीं बन सकते। महानतम बनने के बीज अन्त:करण में मौजूद हैं। बीज में अंकुर तभी निकलता है जब वह फटता है और यही अंकुर एक दिन विशाल वृक्ष बन जाता है। जो लोग अपनी शक्तियों को नहीं पहचानते वो केवल समय पूरा करने के लिए इस धरती पर आते हैं और गुमनामी की मौत मर कर भुला दिए जाते हैं। आन्तरिक शक्ति की पहचान के अभाव में व्यक्ति दूसरों पर निर्भर रहता है। अपनी सफलता के लिए हमेशा कोई-न-कोई सहारा ढूँढ़ता है। दूसरों की शक्ति पर जीने वालों की मन:स्थिति यह होती है कि वे सदैव किसी-न-किसी को दोषी ठहरा कर अपनी कमियों को ढकने का प्रयास करते रहते हैं।

माँ-बाप यदि बच्चों को ऐसे जीवन क्षेत्र में उतारना चाहते हैं जहाँ कि वे बिना परिश्रम के आगे बढ़ जाएँ और उन्हें कोई कष्ट ना उठाना पड़े, तो ऐसी पालना में पले बच्चे अकेले चलना भूल जाते हैं। उनकी मानसिक हालत बैसाखियों पर चलने वाले जैसी हो जाती है। मानसिक रूप से अपंग हो जाते हैं वे, उनकी बुद्धि कुंठित हो जाती है, शक्ति दम तोड़ देती है, भविष्य अंधकार में डूब जाता है। याद रखें -

किनारे-किनारे चले भी तो क्या,
सहारे-सहारे चले भी तो क्या।

यदि सफलता की इच्छा है तो अपनी सहायता आप कीजिए। अपनी कामयाबी के लिए पूरी शक्ति का प्रयोग कीजिए। स्वयं में शक्ति का संचार स्वयं के श्रेष्ठ चिन्तन से होता है। अखाड़े के पास बैठ कर कोई भी शक्तिशाली नहीं बन सकता। व्यायाम दूसरे करें और शक्ति मुझमें आए, यह हो नहीं सकता।

योग्यता जन्मजात नहीं होती। जन्मजात कोई वैज्ञानिक या नेता नहीं होता। अबोध बालक, जन्म के बाद अपनी अन्तरात्मा में ऐसी शक्ति पैदा करता है कि उसके व्यक्तित्व की अलग पहचान बन जाती है। यह कभी न सोचें कि कुछ कार्य केवल किन्हीं अवतारों के लिए निश्चित हैं और आप उन्हें नहीं कर पायेंगे। संसार का हर कार्य, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, दृढ़ संकल्प वाले मनुष्यों द्वारा ही किया गया है। भले ही कम्प्यूटर बहुत से कार्य अति शीघ्र पूरे करता है, यथार्थ रीति से करता है परन्तु उसे भी मानव ने ही रचा है। चाणक्य ने कहा है – **"न दैव प्रमाणा न कार्य सिद्धि"** जिन्हें कार्य आरम्भ करने से पहले ही असफल होने का शक रहता है उनके कार्य कभी सफल नहीं होते और जो समझते हैं कि कार्य सफल नहीं होगा, वे कार्य आरम्भ ही नहीं करते। शंका आत्मविश्वास को खा जाती है। आज इतिहास हमें अनेक उदाहरणों द्वारा यह स्पष्ट बताता है कि हर व्यक्ति की सफलता का आधार उसका आत्म-विश्वास है।

स्वयं पर विश्वास करने से और लगन से कार्य करने पर सफलता की आशा दोगुनी हो जाती है। मन की यह विशेषता है कि इसकी जहाँ लगन होती है यह वहीं मगन हो जाता है, एकाग्र हो जाता है। एकाग्र मन में अद्भुत शक्तियाँ हैं। मन की एकाग्रता के लिए ईश्वरीय ज्ञान चाहिए जो सही मार्गदर्शन दे सके। राजयोग का अभ्यास चाहिए जो आत्मा में शक्ति का संचार कर सके और जागृत आत्मविश्वास चाहिए जो यह भाव पैदा कर सके कि मुझमें अनन्त शक्तियाँ विद्यमान हैं ..... सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है .... मेरी प्रगति निश्चित है - निश्चित है - निश्चित है। ✣
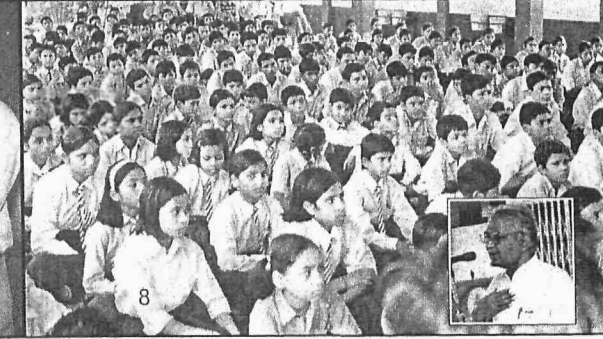
1. प्रतापगढ़ (उ.प्र.)- 'आध्यात्मिक स्नेह मिलन समारोह' में मंचासीन उप-जिलाधिकारी भ्राता पी.पी. अजोर, मुस्लिम नेता भ्राता जमीलुद्दीन साहब, व्यापार मंडल महामंत्री भ्राता अमर केसरवानी, डिप्टी पोस्ट मास्टर भ्राता के.एस. पांडेय तथा बौद्ध भिक्षुगण। ब्र.कु. मनोरमा बहन प्रवचन करती हुई। **2. इन्दौर (रामबाग)**- 'विश्व शांति में विज्ञान की भूमिका' विषय पर आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन करते हुए आकाशवाणी इन्दौर के मुख्य अभियंता सत्यवीर सिंह त्यागी, ब्र.कु. हेमा बहन, ब्र.कु. जयंती बहन तथा अन्य। **3. देवबन्द (सहारनपुर)**- 'तनाव मुक्ति शिविर' में नगर के गणमान्यजनों को सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. अनिता बहन। **4. अजमेर (श्रीनगर रोड)**- 'डाक कर्मचारी सम्मेलन' में मंचासीन अखिल भारतीय डाक कर्मचारी यूनियन राजस्थान के सर्किल अध्यक्ष भ्राता पांडे जी तथा ऑल इण्डिया जनरल सेक्रेट्री भ्राता देशराज शर्मा जी। ब्र.कु. सरोज बहन संदेश देती हुई। **5. खानपुर**- 'कला और संस्कृति प्रभाग' द्वारा निकाले गए अभियान के शुभागमन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. दयाल भाई तथा ब्र.कु. सतीश भाई को स्मृति-चिह्न भेंट करते हुए खजानी महिला बहुतकनीकी संस्थान के निदेशक भ्राता बिजेन्द्र जी, प्राचार्या बहन मोहिनी, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य। **6. कोसली (हरि.)**- शिक्षकों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात देती हुई ब्र.कु. निर्मला बहन। **7. असन्ध (हरि.)**- ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् एस.डी.एम. भ्राता धर्मपाल यादव को सौगात भेंट करती हुई ब्र.कु. उषा बहन। **8. कानपुर (घाटमपुर)**- 'बाल उद्यान शिक्षण संस्थान' के विद्यार्थियों को 'शिक्षा में योग का महत्त्व' विषय पर समझाते हुए ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई।

1. इन्दौर (सुदामा नगर)- 'सकारात्मक परिवर्तन शिविर' का उद्घाटन करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी भ्राता उमेश पटेल, ब्र.कु. शशि बहन, ब्र.कु. दामिनी बहन तथा अन्य। **2. निवाड़ी (म.प्र.)**- जन्माष्टमी कार्यक्रम पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए सांसद भ्राता रामकृष्ण कुसभारिया जी, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति निगम के पूर्व अध्यक्ष भ्राता स्वामी लोधी जी, सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश मंत्री भ्राता बाबूलाल राय, ब्र.कु. चित्रा बहन, ब्र.कु. कविता बहन तथा अन्य। **3. उदयपुर**- ईसाई बहनों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ब्र.कु. रीटा बहन, सेन्ट मेरिज की प्राचार्या बहन किरण, फादर भ्राता प्रसाद तथा अन्य समूह-चित्र में। **4. बिलाड़ा (राज.)**- ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् पुलिस अधीक्षक भ्राता एस.पी. हरिराम जी, उप-पुलिस निरीक्षक भ्राता दशरथ सिंह जी, ब्र.कु. अरुणा बहन, ब्र.कु. जयंती बहन तथा अन्य समूह-चित्र में। **5. इन्दौर (नॉर्थ राजमोहल्ला)**- 'शिक्षक दिवस' पर आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन करते हुए एम.बी. खालसा हायर सेकेण्डरी स्कूल के प्राचार्य भ्राता महेन्द्र सिंह सोढ़ी, श्री वैष्णव एकेडमी के प्राचार्य डॉ. भ्राता जे.एन. जोहरी, गुजराती विज्ञान महाविद्यालय के आचार्य भ्राता जी.डी. शर्मा, ब्र.कु. सीमा बहन एवं ब्र.कु. छाया बहन। **6. छतरपुर**- 'यातायात प्रभाग' के लिए आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. शैलजा बहन के साथ ट्रांसपोर्ट यूनियन के अध्यक्ष भ्राता चुन्नीलाल घनघोरिया, संरक्षक भ्राता जयप्रकाश जी, महामंत्री भ्राता राजकुमार चौरसिया तथा अन्य ट्रांसपोर्टर्स भाई समूह-चित्र में। **7. बाली (राज.)**- तहसील जेल में प्रवचन के पश्चात् भ्राता जेलर साहब, ब्र.कु. स्नेहा बहन तथा कैदी भाई समूह-चित्र में। **8. चूरू**- बालिका महाविद्यालय में 'संबंधों में सद्भावना' कार्यशाला में मंचासीन जिलाधीश भ्राता जे. पी. चंदेलिया, समाजसेवी भ्राता श्रीनिवास मंजवेवाला, प्राचार्य भ्राता एस.एस. दूलार, ब्र.कु. पीयूष भाई, ब्र.कु. सुमन बहन तथा अन्य।

1. दिल्ली (रानीबाग)- 'स्वर्णिम संस्कृति जागृति अभियान' के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. भ्राता साहिब सिंह वर्मा जी सम्बाधित करते हुए। ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. कृष्णा बहन तथा अन्य मंच पर आसीन हैं। **2. हाथरस**- 'सर्वधर्म सम्मेलन' में मंचासीन ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता अशोक कुमार, पूर्व जिला न्यायाधीश भ्राता वी.एन. तिवारी, ब्र.कु. सीता बहन, ब्र.कु. अवधेश बहन, ब्र.कु. राजकुमारी बहन तथा अन्य। **3. वृज विहार (गाजियाबाद)**- 'कला एवं संस्कृति प्रभाग' के अभियान प्रतिभागी सदस्यों को सम्मानित करते हुए श्रम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता के.एल. गुप्ता तथा लोकदल के क्षेत्रीय अध्यक्ष भ्राता किशन सिंह राघव। **4. लखनऊ (इन्दिरा नगर)**- पंजाब नेशनल बैंक के प्रशिक्षण प्रांगण में राजयोग कार्यक्रम के पश्चात् प्राचार्य भ्राता ए.के. जैन को ईश्वरीय साहित्य भेंट करती हुई ब्र.कु. जयश्री बहन। **5. इगलास (उ.प्र.)**- ज्ञान-चर्चा के पश्चात् उप-जिलाधिकारी भ्राता अजयकांत सैनी एवं बहन श्रीमती सैनी को सौगात देती हुई ब्र.कु. हेमलता बहन। **6. मोहाली**- प्रधानाचार्यों को 'तनाव मुक्त प्रबंधन' विषय पर बताती हुई ब्र.कु. शिवानी बहन। **7. नालागढ़**- सार्वजनिक कार्यक्रम के पश्चात् एस.डी.एम. बहन रुपाली ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शकुन्तला बहन। **8. जालंधर**- डॉक्टर्स, हैल्थ विजिटर्स, नर्सेज इत्यादि को प्रवचन देने के पश्चात् सी.एम.ओ. डॉ. भ्राता एच.एस. मिन्हास को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शुक्ला बहन। **9. कश्मीरी गेट**- 'कला एवं संस्कृति प्रभाग' द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गायिका बहन अनिता जैन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. प्रभा बहन तथा ब्र.कु. मीरा बहन।

ईश्वर में तन्मयता

– ब्रह्माकुमारी विजय, बीकानेर

इस संसार में कोई भी मनुष्य चाहे कितना भी महान क्यों न हो परन्तु है तो अपूर्ण ही। भगवान ने कहा है कि देह सहित देह के सर्व धर्मों का परित्याग कर सिर्फ मुझे याद कर तो मैं तुझे सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा। सम्पूर्ण बनने के लिए परमात्मा के प्रति समर्पित होना पड़ेगा अर्थात् तन-मन-धन, मन-वचन-कर्म, संकल्प-श्वास सभी रूपों से प्रभु के प्रति समर्पणमयता (Dedication) ही जीवन को सम्पूर्ण बना सकेगी। शिव बाबा ने हम बच्चों को दिव्य नेत्र दिया है। उसे खुला रखें, सदा भाई-भाई की दृष्टि पक्की रहे तो हम बाबा से शक्ति प्राप्त कर सम्पूर्ण बन जायेंगे। सम्पूर्ण अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण निरहंकारी। देहभान की आँखें बन्द होने पर बाबा ही अपना संसार बन जाता है। समर्पण के सम्बन्ध में एक प्रचलित कहानी इस प्रकार है –

अकबर बादशाह दिन भर यात्रा करते हुए बहुत दूर निकल गए। चलते-चलते नमाज का समय हो गया। तब मार्ग में एक ओर नमाज का वस्त्र बिछा कर दो-जानु (घुटनों के बल बैठना) हो गए। उधर एक युवती अपने पतिदेव को खोजती आ रही थी। उसने नमाज का कपड़ा देखा नहीं और उसी के ऊपर पग रखती हुई आगे बढ़ गई। अकबर को उसकी गुस्ताखी पर क्रोध तो आया परन्तु चुप रहे। थोड़ी ही देर में जब वह युवती अपने पतिदेव के साथ लौटी तो अकबर कहने लगा – "तुझे दिखा नहीं, मैं नमाज पढ़ रहा था और प्रभु भक्ति में था? तुझे नजर नहीं पड़ा नमाज के कपड़े पर पग धरती गई?" युवती ने बड़े धैर्य से एक दोहा बोला–

नर राची सूझी नहीं,
तुम कस लख्यो सुजान।
कुरान पढ़त बोरे भयो,
नहिं राच्यो रहमान।।

''मैं तो अपने पतिदेव की खोज में गुम हो चुकी थी जिस कारण मुझे कुछ सूझा नहीं। परन्तु तुम तो प्रभु-भजन में लीन थे। तुमने मुझे कैसे देख लिया? मालूम होता है कि कुरान ही पढ़ कर बौखला गए हो। भगवान से अभी प्रीत नहीं हुई।'' अकबर यह उत्तर सुन कर अवाक् रह गया।

ईश्वरीय ज्ञान भी हमें बताता है कि ईश्वर से सच्ची दिल की प्रीत हो तो न व्यर्थ दिखाई देगा और न सुनाई देगा। लगन में मगन अर्थात् प्रभु से सच्ची प्रीत जोड़ने के लिए घर का संन्यास करने की ज़रूरत नहीं है बल्कि मन के अशुभ-अशुद्ध विचारों का संन्यास करने की ज़रूरत है। परमात्मा को बस हमारा शुद्ध मन चाहिए। मन निर्मल है तो प्रभु से सर्व प्राप्तियाँ करना कोई मुश्किल नहीं है। ✪ ✪

जिम्मेवारी

जिम्मेवारी संकीर्ण विचारों और निम्न स्वभाव को समाप्त कर देती है। जिम्मेवारी संभालते हुए मनुष्य को चाहिए कि वह अथक होकर अपने कार्य में तत्पर रहे और सभी मनुष्यात्माओं को सन्तुष्ट करना ही अपना लक्ष्य रखे। सबकी सन्तुष्टता आशीर्वाद के रूप में उसे बल देगी और वह अपने कार्य में सफल होकर दिनोंदिन आगे बढ़ता जायेगा। मनुष्य के पास जितनी बड़ी जिम्मेवारी हो, उसे उतना ही नम्र होना चाहिए। उसे मृदुता और नम्रता को तिलांजली नहीं दे देनी चाहिए। अधिक कार्य भार होने पर 'सरलता' का गुण भी साथ-साथ होना चाहिए। इससे सभी सन्तुष्ट भी हो सकेंगे और सहयोगी भी बन सकेंगे।

**

सत्यता की शक्ति

– ब्रह्माकुमारी शीलू, आबू पर्वत
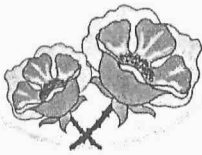
आज के इस घोर कलियुग में चारों ओर देखा जाये तो असत्यता का ही राज्य चल रहा है। लोग यही कहते हैं कि झूठ बोलो और काम निकालो। आज की दुनिया में सच का स्थान है ही नहीं। ऐसा लगता है कि झूठ ही सर्वव्यापक है और झूठ में भी कितनी चमक है! आप सच्चा सोना देखिये और नकली सोने को भी देखिये, अधिक चमकदार नकली सोना दिखाई देगा। आज झूठ के बीच सत्य जैसे कि छिप गया है। लोग झूठ को ही सत्य मान कर बैठे हैं और सत्य को तो शायद जानते ही नहीं हैं। लेकिन सत्यता का गायन जरूर है। ईश्वर के लिए कहा जाता है – ईश्वर सत्य है (God is truth)। इसी प्रकार, यह भी गायन है - सत बोलो, गत है अर्थात् सत्यता की सदा विजय है। जहाँ सत्यता है वहाँ पर ईश्वर है। लेकिन सत्यता से लोग डरते क्यों हैं? हर एक व्यक्ति सोचता है कि अगर हम सत्यता के मार्ग पर चलेंगे तो सफलता कभी भी नहीं मिलेगी। एक व्यापारी सोचता है कि अगर मैं सच्चाई से व्यापार करूँगा तो आजीविका नहीं कमा पाऊँगा। व्यापार माना ही जिसमें झूठ हो, सच्चाई का व्यापार तो होता ही नहीं है – यह कुछ लोगों की मान्यता है। वकील सोचता है कि अगर मैं सत्यता के मार्ग पर चलूँगा तो मेरी वकालत कभी नहीं चलेगी, मुझे तो झूठ बोलना ही पड़ता है। विद्यार्थी सोचता है कि अगर मैं सच्चाई पर चलूँगा तो नम्बर कम आयेंगे इसलिए मुझे तो नकल करनी ही पड़ती है। तो देखिए, हर एक व्यक्ति सत्यता से डरता है, सत्यता से दूर भागना चाहता है और सोचता है कि झूठ बोलो और काम निकालो। कई लोग सत्यता से इसलिए भी दूर भागते हैं क्योंकि कहावत है कि सत्य कड़वा होता है। लेकिन थोड़ा गहराई से हम सोचेंगे तो पायेंगे कि सत्यता कड़वी नहीं है।

सत्यता बहुत बड़ी शक्ति है। जैसे – ईश्वर सत्य है, तो उनकी सत्यता की शक्ति भी बड़ी श्रेष्ठ है। सत्यता की शक्ति मंगलकारी है, विघ्नविनाशक है, सुखकारी है। लोग सत्यता की परिभाषा को नहीं जानते इसलिए सत्यता से डरते हैं। जो चीज जैसी है, उसे वैसे ही जानना, फिर उसे मानना, फिर उसे अन्य को बतलाना, तदुपरान्त उसे अपने व्यवहार में लाना – यह है सत्यता की परिभाषा। कई बार हम देखते हैं कि मनुष्य सत्यता को जानता ज़रूर है लेकिन मानने को तैयार नहीं होता। इसलिए क्या होता है कि मन और बुद्धि के बीच में एक संघर्ष उत्पन्न होता है। बुद्धि सत्यता को स्वीकार करती है लेकिन अनेक आकर्षणों में फँसा हुआ मन उसको स्वीकार नहीं करना चाहता। कई बार ऐसा भी होता है कि हम सत्यता को जानते हैं, मानते भी हैं लेकिन बताने में संकोच करते हैं। अन्दर में भय लगता है कि अगर सत्यता सुना देंगे तो कहीं हमारा ही नुकसान न हो जाए। अगर बतलाते नहीं हैं तो इसका अर्थ है कि हमें सत्यता का मूल्य नहीं है। अगर कोई बात सत्य है तो उस सत्य को बताने में कभी भी संकोच नहीं करना चाहिए। कई बार हम बता तो देते हैं लेकिन व्यवहार में उसे नहीं उतारते। यह तो ऐसे हुआ जैसे कि कानून को जानते हैं लेकिन कानून पर चलते नहीं हैं। ऐसे में हम सजा के भागी अवश्य बनेंगे। कई बार हमारे मन में सोच चलता है कि इन्सान झूठ क्यों बोलता है? लेकिन इसके कई कारण हैं।

मान लीजिए, एक बच्चा घर में खेल रहा है। उसने फूलों का गुलदस्ता गिरा कर तोड़ दिया। माँ ने गुस्से में कहा – "बेटा, यह किसने गिराया?" बच्चे को डर लगता है कि अगर मैं सच बताऊँगा तो मम्मी मारेगी। भूल करने के बाद सजा का

भय उससे झूठ बुलवा लेता है। यह एक कारण है झूठ बोलने का। कई लोग कहते हैं कि अगर कोई झूठ बोलता है तो हमें गुस्सा आता है। वे सोचते हैं कि क्रोध के डर से वह व्यक्ति सच बोल देगा। लेकिन अनुभव कहता है कि क्रोध करने से वह व्यक्ति ज्यादा ही झूठ बोलेगा। अत: क्रोध करके हम उससे जान-बूझ कर झूठ बुलवाते हैं। अगर हम प्रेम से व्यवहार करें तो वह सत्य अवश्य बतायेगा। जिससे मित्रता होती है, जिससे स्नेह होता है, उसको सत्यता अवश्य बताई जाती है। जिससे दुश्मनी होती है, क्रोध होता है उसको सच-सच बताने में संकोच होता है। कई बार हम चाहते हैं कि दूसरे की चीज़ मुझे मिल जाए अर्थात् मेरा तो मेरा पर तेरा भी मेरा मान कर दूसरे को धोखा देना चहते हैं। धोखा देकर किसी की चीज हड़प लेते हैं। तो झूठ का दूसरा कारण है स्वार्थसिद्धि। कई बार किसी को हानि पहुँचाने के लिए झूठ बोलते हैं और कई आलस्य के कारण भी झूठ बोलते हैं। प्रमादवश कार्य पूरा करेंगे नहीं और झूठ कह देंगे कि कर लिया। ये सब कारण झूठ के हैं। झूठ कभी अकेला नहीं होता। एक झूठ के पीछे मनुष्य को और कितने ही झूठ बोलने पड़ते हैं। कई बार ऐसा होता है कि प्रारम्भ में झूठ के वाक्य कुछ और होते हैं परन्तु झूठ भी असली रूप में नहीं रह पाता। इस प्रकार, झूठा व्यक्ति चकरा जाता है। जो व्यक्ति सत्यवादी होता है उसे अपने वाक्यों को बदलने की आवश्यकता नहीं। झूठ का परिणाम हमेशा झूठ होगा, जिसने झूठ का सहारा लिया उसमें और भी अनेक अवगुण होंगे।

जो व्यक्ति सत्यता के मार्ग पर होता है उसको सत्य बोलने में कोई हिचक नहीं होती। वह सरल और निर्भय होता है, उसकी नि:स्वार्थ भावना होती है। इन सब बातों को अपनाने में उसे कोई कठिनाई भी नहीं होती। सरलता से, स्वाभाविकता से उन गुणों को वह अपना लेता है क्योंकि वह सत्यवादी है। सत्य की तुलना प्रकाश के साथ कर सकते हैं। असत्य की तुलना अन्धकार से कर सकते हैं। कोई भी चीज़ प्रकाश में हमें स्पष्ट दिखाई देती है। अन्धकार में, चाहे कितनी भी अच्छी वस्तु क्यों न हो, वह स्पष्ट दिखाई नहीं देती। जो व्यक्ति सत्यवादी होगा उसकी हर बात स्पष्ट होगी। उसे कोई भी बात छिपाने की आवश्यकता नहीं होगी और जो झूठा होगा वह हर बात छिपाता रहेगा। हर बात पर, हर कदम में वह डरता रहेगा। कई बार हमें झूठ बोलना पड़ता है क्योंकि सच बोलने से नुकसान होता है। जैसे कोई कैंसर का रोगी यदि डॉक्टर से पूछता है कि मुझे क्या रोग है तो डॉक्टर उसे एकदम से नहीं बताएगा कि तुम कैंसर के रोगी हो। क्योंकि डॉक्टर जानता है कि इसकी आत्मा और शरीर दोनों कमजोर हैं। अगर मैंने सच बता दिया तो कहीं अभी ही इसका हार्ट फेल न हो जाए। इसलिए कुछ देर तक वह रुकता है अथवा 'कोई खास नहीं' ऐसा कह कर बात को हल्का करने का प्रयास करता है। अन्दर में कल्याण की भावना होती है। लगता है कि वह झूठ बोल रहा है लेकिन उस झूठ में भी सत्यता छिपी रहती है क्योंकि भीतर में कल्याण की ही भावना होती है। एक छोटा-सा बच्चा आपसे कई प्रश्न पूछेगा। क्या आप सबका उत्तर दे सकते हो? नहीं, क्योंकि बात उसकी सीमित बुद्धि के अनुसार ही की जायेगी। कल्याण के लिए शब्दों को फिराना पड़ता है, कुछ समय के लिए सत्य को स्थगित भी करना पड़ता है। यह ज़रूरी है कि सत्य बात समय, व्यक्ति, स्थान को देख कर बोलें। कितनी ही कड़वी चीज़ें हम पीते हैं, मिठास डाल कर पी लेते हैं। इसी प्रकार, सत्य बात भी हम मधुरता के साथ कह सकते हैं। जैसे एक डॉक्टर ऑपरेशन करने से पहले मरीज का ब्लड प्रेशर और मधुमेह सामान्य करेगा, तब ऑपरेशन करेगा। इसी प्रकार, उचित समय, स्थान, व्यक्ति को देख कर, समझ कर हम सत्य बात अवश्य कहें। सत्य मीठा है। सत्य सुख देता है। परमात्मा सत्य है, इस बात को भी हम अनुभव

करें। आध्यात्मिकता जो सत्य है, उसको हम कभी भी नकारें नहीं। उसकी शक्ति को पहचानें, आत्मा सत्य है, परमात्मा सत्य है। प्रकृति सत्य है, कर्मों की गति सत्य है। इन चारों चीजों को हम सत्य के रूप में स्वीकार करें। आत्मा सत्य अर्थात् अविनाशी है, अजर है। यह है सत्यता का स्वरूप। परमात्मा सत्य है क्योंकि परमात्मा अपरिवर्तनशील है, अविभाज्य है, अदृश्य तो है ही परन्तु हम उनका दिव्य दर्शन कर सकते हैं। परमात्मा के ज्योतिस्वरूप आकार का हम दर्शन कर सकते हैं। उनका साक्षात्कार कर सकते हैं, यह परमात्मा की सत्यता है। उनके सान्निध्य में विराजमान होकर हम उनके गुणों की प्राप्ति कर सकते हैं। प्रकृति भी सत्य है क्योंकि उसका असली स्वरूप सुखस्वरूप है। पाँचों तत्व अपने मूल रूप में सुखरूप हैं। आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी ये पाँच महाभूत वास्तव में सुखकारी हैं इसलिए इन तत्वों को भी देवता के रूप में माना गया है। अग्नि देवता, वायु देवता, जल देवता, धरती को भी देवता के रूप में मान कर इनकी पूजा होती है। कहा जाता है जो इशारे से चले, इशारे को समझे, अपने आप करे वही देवता है। जो कहने से करे वह है इन्सान और जो जबरदस्ती के आधार पर करे, वह है हैवान। इसलिए यह प्रकृति भी देवता का काम करती है। लेकिन आज प्रकृति विकृत हो गई है क्योंकि मनुष्य के कर्म विकृत रूप ले चुके हैं और उसका फल हम प्राकृतिक आपदाओं के रूप में भुगत रहे हैं। अकाल, बाढ़, भूकम्प, आँधी, तूफान का जो विकराल रूप हम दुनिया में देख रहे हैं, ये सारे प्रकोप हमारी असत्यता के कारण हैं। वास्तव में, आत्मा सत्य है, परमात्मा भी सत्य है, प्रकृति भी सत्य है और कर्मों की गति भी सत्य है। हम कोई भी कर्म करके उसके परिणाम से छूट नहीं पायेंगे। जो मैंने कर्म किया है वह छाया समान पीछा करता रहेगा। तो क्यों नहीं, इन चार बातों को समझ कर हम सत्यता की शक्ति को अपनाएँ और यह बुद्धि से निकाल दें कि हमें झूठ ही बोलना है और झूठ से ही काम निकालना है। झूठ ज्यादा चमकता दिखाई देगा लेकिन उस झूठी चमक के पीछे हमें दौड़ना नहीं है।

सुन्दर कवर चढ़ाने से किताब सुन्दर नहीं बनती। अन्दर में क्या सामग्री है? क्या शब्द हैं? क्या वाक्य हैं? उसके आधार पर किताब का मूल्य होता है। व्यक्ति केवल बाहर से आकर्षक हो, तो मूल्यवान नहीं बन जाता। मनुष्य अपने कर्मों से ही पहचाना जाता है। अत: अगर हम सत्यता की शक्ति को समझेंगे तो कभी भी झूठ का सहारा नहीं लेंगे और सत्यता की शक्ति वाले अवश्य महान बनते हैं। परमात्मा के समान बनते हैं। हमें किसी से डरने की भी आवश्यकता नहीं। क्यों हम किसी से डरें? अगर कोई इन्सान भूल करता है तो उसके मन में भय पैदा होता है। अगर मैं भूल नहीं करूँ तो मुझे डरने की कोई आवश्यकता नहीं। वास्तव में भय भी आत्मा को कमजोर बना देता है। कई बार हम भय के कारण मन में विचार उत्पन्न करते हैं और आत्मा को कमजोर बनाते जाते हैं। सत्यवादी बनो और अपने मन में एक दृढ़ संकल्प करो कि मुझे सत्यता के मार्ग पर चलना है। मुझे ईश्वर से अपना सम्बन्ध जोड़ना है और हर हालत में उनसे शक्ति लेकर मुझे परमात्मा की तरह मास्टर सर्व शक्तिवान बनना है और जब मैं स्वयं शक्तिवान बनूँगी तब मैं अनेक आत्माओं को शक्ति प्रदान कर सकूँगी। ये सत्यता की शक्ति ऐसी शक्ति है जो खुद भी धारण करो और अनेकों को धारण कराओ तो ये संसार अवश्य सत्यवादी होगा। सत्यवादी बनते-बनते कलियुग बदल कर सतयुग आ सकता है। यह हम सबका दावा है। इसलिए निश्चय के साथ हम सत्यता की शक्ति को पहचान कर, उसे अपने जीवन में लाएँ, सत्यता को आगे बढ़ा कर इस संसार को सतयुग बनाएँ।

मानव मात्र की तीन श्रेणियाँ

– अशोक घेवडे, हडपसर (पुणे)

भिन्नता भरे इस संसार में मानव भी भिन्न-भिन्न स्वभाव के हैं। मुख्य रूप से, स्वभाव की दृष्टि से उन्हें तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है –

1. काँटे जैसे लोग – ऐसे लोगों की प्रकृति ऐसी होती है कि वे अकारण ही दूसरों के लिए विघ्न बनते रहते हैं। भले ही आप उनका कुछ न बिगाड़ें, उनसे सौ कोस दूर रहें, फिर भी वे परेशान किए बिना नहीं रहते हैं। शुभ कार्य में विघ्न डाले बिना उन्हें शान्ति नहीं मिलती। जैसे बिल्ली पीयेगी नहीं तो दूध को गिरा देगी। वे दूसरों के खुशी और आनन्द से भरपूर वातावरण को सहन नहीं कर सकते, उन्हें दूसरों का रोना ही अच्छा लगता है। जैसे काँटा कठोर होता है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाता है, उसी प्रकार, ये लोग दूसरों के लिए काँटे के समान पीड़ाकारी होते हैं। इनका आगमन भी शान्त वातावरण में विषाद भर देता है। अपनी घातक प्रवृत्ति के कारण ये अन्त में महादुःखी होते हैं। इनके जीवन का संध्याकाल बड़े कष्ट में गुजरता है।

2. जैसे से तैसा व्यवहार करने वाले – ये लोग भले के साथ भलाई का और बुरे के साथ बुराई का व्यवहार करते हैं। ये मानते हैं कि अपने साथ जो अच्छा व्यवहार करे उसके साथ हमें भी अच्छा व्यवहार करना चाहिए और जो बुरा करे उसके साथ हमें भी बुरा व्यवहार करना चाहिए। पशु भी अपने दुश्मन से बदला लेता है। बैल को लकड़ी से पीटा जाए तो वह सींग से मारने की कोशिश करता है। इसी प्रकार, जो व्यक्ति वैर का बदला वैर से, प्रेम का बदला प्रेम से चुकाने की बात करते हैं उनमें बदले की भावना तीव्र होती है।

3. फूल जैसे – ऐसे व्यक्ति दुनिया में गिने-चुने होते हैं। ये मानवीय देह में रहते भी उससे न्यारे होकर रहते हैं। उनमें गुणों के दर्शन होते हैं। उनका व्यवहार फूल जैसा होता है। फूल को कोई तोड़े या कुचल दे तो भी वह सुगन्ध प्रदान करता है। इसी प्रकार, फूल जैसे लोग अपकारी या उपकारी दोनों पर सतत् उपकार की ही वर्षा करने वाले होते हैं। इनका सिद्धान्त होता है – जो तुम्हारे मार्ग में काँटे बिछाए उसके मार्ग में भी तुम फूल बिछाओ। अपने ही दाँत से यदि जीभ कट जाती है, तो क्या आप अपने दाँतों को तोड़ डालते हैं? यदि नहीं तो फिर जिसने अज्ञानतावश कोई भूल कर दी है तो उसके साथ कटु व्यवहार करने की क्या आवश्यकता है? देखो उस चंदन के वृक्ष को, जो स्वयं को काटने वाले कुल्हाड़े को भी सुगन्ध से भर देता है। तुम तो फिर मानव हो! अपकार का बदला उपकार से चुकाना देवत्व है। इस उत्तम प्रकृति के लोग ही इस धरती के सुपुत्र हैं। वे मर कर भी अमर हो जाते हैं। आइये, निरीक्षण करें, हम कैसे हैं और हमें कैसा बनना चाहिए?

✪✪

व्यवहार

अच्छे व्यक्ति से अच्छा व्यवहार तो सभी करते हैं परन्तु इसमें कोई महानता नहीं। महानता तो इसमें है कि जो बुरे हैं उन्हें भी गले से लगायें, उन्हें भी समीप लाएँ, उनसे भी प्रेम करें ताकि उन्हें लगे कि इस भरे जग में हमारा भी कोई है, नहीं तो बुरों की क्या हालत होती है? जहाँ जाएँ, वहीं फटकार। इसमें उनका जीवन निराशायुक्त और अशांत रहता है और उन्हें अच्छे बनने की प्रेरणा नहीं मिल पाती। बुरे से बुरा व्यवहार कर हम तो बुरे न बनें। जैसे यह सत्य प्रसिद्ध है कि जिनका इस संसार में कोई नहीं, उनका भगवान है। वैसे ही बनो। जिसे इस संसार में कोई प्यार नहीं करता उसे तुम प्यार करो तो तुम साक्षात् ईश्वर समान बन जायेंगे।

**

ऐसा ज्ञान कहीं नहीं मिला

– ब्रह्माकुमार डॉ. इन्द्रदत्त पाण्डेय, बलिया (उ.प्र.)

मैं केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालित केन्द्रीय विद्यालयों में दो दशकों तक प्राचार्य रहा, कई प्रान्तों में स्थानान्तरित होकर सेवा करता रहा, समस्त भारत का सपरिवार भ्रमण किया, स्थान-स्थान पर ज्ञान-चर्चाओं में भी भाग लिया, शास्त्रों-उपनिषदों-षड्दर्शनों का अध्ययन भी किया, प्रख्यात चिन्तकों-सन्तों-मनीषियों के प्रवचन भी सुने, इन्हीं दर्पणों में मैं ज्ञातव्यों को देखता-परखता रहा, मेरी एक दृष्टि-वृत्ति भी बनी। पर सेवानिवृत्त होने पर मैं भाग्य की कृपा से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से अचानक ही जुड़ गया। यहाँ की बहनों के पवित्र आचार एवं स्नेहिल विचार ने मुझे बड़ा प्रभावित किया। यद्यपि हमारे केन्द्रीय विद्यालयों में समय लेकर ब्रह्माकुमारियाँ ज्ञान-सेवा हेतु आया करती थीं पर मैंने इतना ध्यान नहीं दिया था। इनसे निकटतापूर्वक जुड़ने पर मुझे अभूतपूर्व, अनुपम अद्वितीय ज्ञान मिला जो मुझे कहीं नहीं मिला था। मैं तो प्राप्त-प्राप्तव्य एवं कृतकृत्य हो धन्य हो गया। यहाँ की मुरली, नित्य नूतन ज्ञान को बरसाने-सरसाने वाले उमड़ते-घुमड़ते बादल हैं जो रोज ही तो भिगो देते हैं, सराबोर कर देते हैं, अन्तर तक रससिक्त कर देते हैं। हमने याद की यात्रा का राजपथ पकड़ा है, काँटों से फूल बनते हुए हम ज्ञान का पाथेय लिए हुए इस पर बढ़ते जा रहे हैं। हम देह एवं देह-संबंधों से निकल, पुरानी दुनिया की डूबती नाव से उतर कर पुरुषोत्तम संगमयुग की नाव में बैठ गए हैं जिसके नाविक हैं स्वयं परमपिता परमात्मा शिव। यह नाव क्षीर सागर में चल रही है। हम साहेबजादे हैं। साहेब की श्रीमत का अनुसरण करते हुए शहजादे बनने वाले हैं। शिव बाबा हमें ज्ञान दे रहे हैं – हमारे सम्मुख ही बैठ कर। हम विश्व में दैवी राज्य स्थापित कर रहे हैं, राजधानी बना रहे हैं। बाबा तो हमें इतना दे रहे हैं कि 21 जन्मों तक हम समृद्ध बने रहेंगे, हमें किसी चीज़ की कभी कमी ही नहीं होगी। हम कल्प-कल्प माया से हारते आए हैं, इस समय माया हमारी मुरीद नहीं दुश्मन है, इससे बराबर सतर्क-सावधान रहना है। हमारी रग-रग में जो काम-क्रोध-मद-लोभ-मात्सर्य आदि के भूत भरे हैं, हम उन्हें निकाल कर सम्पूर्ण पावन बन रहे हैं। स्व-परिवर्तन द्वारा विश्व-परिवर्तन का प्रकम्पन दे रहे हैं। इच्छा-मात्रम्-अविद्या का संस्कार अपने में भर कर हम बाबा की ही याद में सदा रहते हैं। उनकी याद सदा सहज बनी रहे इसके लिए हम यह समझते-मानते हैं कि हम परमधाम निवासी आत्मा यहाँ अपनी भूमिका अदा करने आए हैं। सारा संसार एक महानाटक है, जो पहले हो चुका है वह फिर दुहराया जा रहा है, हूबहू वही चल रहा है। हम मेरे को तेरे में परिवर्तित कर रहे हैं और ज्ञान के अविनाशी रत्नों से अलंकृत-शृंगारित होकर बेगमपुर के बेफिक्र बादशाह बने हैं। हमारा परमपिता हाथों में हाथ देकर चल रहा है और हमें भी अन्तर्मुख तथा हर्षितमुख किए रहता है। कितना अच्छा साथी है वह। हमसे बिछड़ गया था, अब मिला है तो उसका साथ हम नहीं छोड़ सकते। हम खुदाई खिदमतगार बने हैं। पारस बन रहे हैं। उनकी बुलबुल बन हम आनन्दमग्न हैं। वे हमें अपने नयनों पर बिठा कर अपने साथ ले जायेंगे। वे नयन हैं – ज्ञान के। हम तो आत्मा हैं - भृकुटी के मध्य में हमारा निवास है, इसी स्मृति में रह हमने देही-अभिमानी बनने की आदत अपने में डाल ली है। राजयोग से हम ऊँची स्थिति में स्थित हैं, फरिश्ते बने हैं, पाँव धरनी पर नहीं हैं। माया के चक्रों को हमने स्व-दर्शन चक्र से समाप्त कर दिया है। हम पर अब राहू की नहीं बृहस्पति की दशा है। हमारी हर घड़ी अन्तिम घड़ी है। हम प्रभु की भुजा बने हैं, भुजा प्रतीक है - कर्म-स्नेह-सहयोग एवं शक्ति की।

✪✪

साहस जहाँ सफलता वहाँ

ब्रह्माकुमार विनोद, आबू पर्वत

जीवन संग्राम में सफलता की आकांक्षा तो सभी रखते हैं लेकिन विजयी वही होते हैं जो स्वयं की शक्तियों को लक्ष्य पर केन्द्रित करते हैं और अपने कर्त्तव्यों को सम्पूर्ण निष्ठा, लगन, अटूट साहस एवं कड़ी मेहनत से पूरा करते हैं। साहस अद्‌भुत शक्ति का ऐसा प्रबल प्रवाह है जो अयोग्य व्यक्ति को भी सुयोग्य, कर्मठ एवं तेजस्वी बना देता है, लंगड़े में जान डाल कर धावक बना देता है तथा बार-बार हारने वाले को विजयश्री दिला देता है। कार्ल मार्क्स, सुकरात ऐसे साहसी हुए जिन्होंने कुर्बानी दे दी लेकिन कभी हार स्वीकार नहीं की।

बिना साहस के किसी पुरुषार्थ एवं उसके सुख की कल्पना नहीं की जा सकती। जिनमें साहस है वे अन्ततः सफल हो ही जाते हैं। जो कठिन परिस्थितियों, असफलताओं में डट कर संघर्ष करते हैं, पीछे मुड़ कर देखते नहीं, कार्य को पूरा करने की क्षमता रखते हैं, प्रतिकूलताओं में भी आशावान एवं हँसमुख रहते हैं, मायूसी, निराशा को नजदीक नहीं आने देते, वे निश्चित रूप से साहसी हैं किन्तु जो साहसी नहीं हैं वे कुछ भी करने में सक्षम नहीं होते और अकर्मण्य हो आलसी, कायरों, अपाहिजों की भाँति दूसरों के सहारे अपमानित, शोषित जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं। अतः साहस सुखद जीवन की अनिवार्यता है। जीवन की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति सहित चरित्र के विकास तथा रक्षा हेतु साहस होना चाहिए। शेक्सपियर के शब्दों में **''जो मानवीय गौरव के अनुकूल है उसकी पूर्णता के लिए मैं साहस रखता हूँ, इससे अधिक साहस रखने वाला मानव नहीं होता।''**

विश्व पटल पर लोकतान्त्रिक व्यवस्थाएँ देश, समाज के विकास हेतु संघर्षरत हैं जिसकी सफलता के लिए राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति जागरुकता पैदा कर व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, दुराचार से निजात पाना अत्यन्त आवश्यक है। किन्तु जहाँ स्वार्थ, भय अथवा पिछलगू होने का सुख समाया है वहाँ प्रतिकूलताओं, अनाचारों का सामना करने का साहस नहीं हो सकता। जो क्रोध, अहंकार में आकर दूसरों को तंग करने, लड़ने-झगड़ने के आदी हो गए हैं वे शान्ति, सद्‌भाव एवं पवित्रता का अनुसरण नहीं कर सकते। समयानुसार आपस में सलाह-मशविरा करते हैं कि ऐसा समाधान होना चाहिए किन्तु जब त्याग कर कुछ कर गुजरने का मौका आता है तो सभी के मन में एक ही प्रश्न गूँजता है कि बिल्ली के गले में घण्टी कौन बाँधेगा।

जीवन का सुख व्यक्ति की स्वतन्त्रता एवं आत्मनिर्भरता में सन्निहित है और आत्मनिर्भर होने के लिए कठिन परिस्थितियों का सामना करने का साहस होना चाहिए। अवसर का जोखिम उठाने की आकांक्षा रखनी चाहिए। साधना पथ आत्मसंयमी, निर्भय, साहसी एवं पराक्रमियों के लिए है। जिन्हें हर कदम विवेकपूर्ण और मर्यादित रखना है, तपस्या की गहराई में जाकर अनुभवों के अनमोल हीरे-रत्नों से स्वयं को भरपूर करना है और योगाग्नि से सर्व विकारों को भस्म करना है तो इसके लिए सतत पुरुषार्थ की आवश्यकता है। जैसे सागर के भीषण तूफानों में नाविक निरन्तर मुकाबला करके मंजिल पर पहुँच जाता है इसी तरह साधक, अटूट साहस से संसार सागर के भयंकर तूफानों के बीच, पवित्रता रूपी नाव में सवार होकर सतत ईश्वरीय चिन्तन एवं ऊँचे विचारों के बल से पार हो जाता है किन्तु जिनमें साहस नहीं, स्व-परिवर्तन की क्षमता नहीं, जो व्यभिचारी या भयभीत हैं वे साधना

पथ के किनारे ही बैठे रहते हैं। कबीरदास ने भी कहा है –

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।
मैं बपूरा बूड़न डरा रहा किनारे बैठ।।

जितनी ऊँची मंजिल, परीक्षाएँ भी उतनी ऊँची

जो व्यक्ति जितनी ऊँचाई पर जाता है उसे उतनी अधिक परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। एवरेस्ट जैसे शिखर पर जाने वाले को विघ्न, बाधाएँ भी अधिक आती हैं। राजयोगी को तो साधना की डगर पर स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना है, सर्वात्माओं को शान्ति, सुख, पवित्रता के प्रकम्पन देकर जीयदान देना है। उसे भी कठिन बाधाओं को पार करना ही पड़ेगा इसलिए निर्भय होकर आगे बढ़ते ही रहना है। **दृढ़ता, साहस एवं पराक्रम से असम्भव भी सम्भव हो जाता है। जहाँ बुलंद इरादे हैं, कुछ करने की तमन्ना है वहाँ मंजिल सरल हो जाती है और ईश्वरीय मदद भी मिलती है।**

असफलताओं से न मानें हार, तीव्र पुरुषार्थ से करें प्रहार

किसी क्षेत्र में जब व्यक्ति बार-बार असफल होने लगता है तो वह हार मान लेता है और विमुख होकर दूसरे व्यवसाय की तलाश करता है किन्तु साहसी कभी हारता नहीं, सूझबूझ से सफलता प्राप्त कर लेता है। इसके लिए अपनी मनोदशा को सकारात्मक बनायें, कार्य के प्रति सम्पूर्ण विश्वास एवं समर्पणमयता सहित प्रयत्न करें, जीत अवश्य मिलेगी। यदि आप साधना पथ पर हैं तो आत्म समीक्षा करें कि कहाँ और किस गलती के कारण हमारी हार होती है। संगदोष, नकारात्मक वृत्तियों का प्रभाव, वायुमण्डल या स्वयं की कमजोरी। यथार्थ अवलोकन कर कमजोरी को प्रभु अपर्ण करें और इस युक्ति को चरितार्थ करें – **हिम्मत न हारिए, विसारिए न राम को।** साधना की कसौटी वही है जहाँ साधक ठहर जाता है, विचलित होता है या हार मान लेता है। आत्मसंयम, साहस, अटूट विश्वास और ईश्वरीय स्मृति से उसे पार करने में ही उसकी सफलता है।

प्रसन्नता एवं धैर्य से करें प्रतिकूलता का सामना

उतार-चढ़ाव जीवन का हिस्सा है। स्थिति सदैव एक जैसी नहीं होती है। कभी-कभी आकस्मिक घटनायें, प्राकृतिक अतिवृष्टि, शारीरिक बीमारियाँ तथा दूषित वृत्तियाँ अतिक्रमण करती हैं जिनमें साधक निराश होने लगते हैं लेकिन प्रज्ञावान वह है जो इन प्रतिकूलताओं में भी प्रसन्नचित रहता है और धैर्य से उनका सामना करता है। उनको स्व-उन्नति का साधन बना लेता है। जो साहस कर स्व-परिवर्तन, स्वानुशासन रखते हैं, धैर्य से कठिन विपत्तियों में मुस्काते हुए कर्त्तव्यशील रहते हैं वे सर्वत्र जीत हासिल करते हैं। जितना साहस प्रबल होता है उतनी ही जीत भी अव्वल होती है।

निराशा के तिमिर से आच्छादित न होने दें स्व-पुरुषार्थ को

जीवन में कुछ घटनाएँ होती हैं जो व्यक्ति को सावधान कर समाधान देकर जाती हैं। इसमें निराशा की बात नहीं लेकिन यदि हमें स्व-पुरुषार्थ में चारों ओर असफलता ही मिलती है या सब कुछ इच्छा के विपरीत हो रहा है तो हिम्मत रख उम्मीद रखिए, इसमें ही आपकी भलाई है। नकारात्मक दृष्टिकोण, व्यर्थ चिन्तन भी व्यक्ति को निराश कर देते हैं और कुछ ऐसी बुराइयाँ होती हैं जिनसे छुटकारा न पाने के कारण निराशा आ जाती है। कभी-कभी झूठे आरोपों से उपजी बदनामी भी मायूस कर देती है। कुसंग का बहाव भी निराश कर स्व-पुरुषार्थ से किनारा करा देता है। हम अपनी गलतियों को स्वीकार कर उनका सुधार करें किन्तु उनका चिन्तन बार-बार न करें। यह साहसी बनने में सबसे बड़ी बाधा हो सकती है। आत्मदर्शन, आत्मिक भाव, सकारात्मक सोच साधना को सरल कर देगी। अच्छा है कि हम हर्षोल्लास से संकल्पों को महान बनाएँ, उन्हें अनुभव में लायें और अपने कर्त्तव्य पर आरूढ़ होने के लिए निरन्तर कुछ पुरुषार्थ करें। इस जीवन को सफल करें किन्तु निराश कभी न हों। कविवर

रामनरेश त्रिपाठी जी अति प्रेरणाप्रद शब्दों में लिखते हैं –

नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रह कर कुछ नाम करो,
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो जिससे यह व्यर्थ न हो,
अरे! कुछ तो करो
निज साधन को।।

उत्कृष्ट सफलता हेतु आवश्यक है साहस एवं संयम का समन्वय

साहस सफलतादायक है किन्तु साहस के साथ संयम का समन्वय है तो उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर सकते हैं। संयम का अर्थ यह कदापि नहीं कि हमारी गति 'नौ दिन चले ढाई कोस' जैसी हो। लक्ष्य भेद करने में तीव्र पुरुषार्थ तो अनिवार्य है लेकिन साथ ही नकारात्मक, दुर्भावनायुक्त विचारों, व्यवहारों से परहेज भी हो, जैसे रोगी दवा लेने के साथ परहेज भी रखता है। साहस और संयम ऊँची गति के दो पहलू हैं। इन दोनों के सन्तुलन से साधक आत्मोत्थान कर सकते हैं। अति साहस के उद्वेग में आकर उतावला होना, कुछ अनिष्ट कर लेना, दूषित वृत्तियों को पोषण देना किंचित भी अच्छा नहीं है। आप स्वच्छ विचारों, भावनाओं से हर्षोल्लास में रहें, सर्व प्रति शुद्ध स्नेह, शुभ भावना रखें। निराशाजनक घटनाओं को साहस से सुलझा लेना, समा लेना अच्छी बात है। साथ ही स्वार्थ पोषण हेतु झूठ बोलने, छिपाने, संग्रह वृत्ति एवं अपवित्र संकल्पों को संरक्षण न देने का संयम भी रखें।

जीवन में जो बाधाएँ हैं वे स्वयं की हीन भावनाओं से निर्मित हैं। साहस एवं सकारात्मक विचारों से हर मुश्किल को आसान कर सकते हैं, स्वयं की बुराइयों को जीत सकते हैं और सफलता की ऊँचाई को छू सकते हैं लेकिन शर्त है कि विकारों की जंजीरों को तोड़ने का दृढ़ आत्मविश्वास हो और हर कुरीति से लड़ने की चुनौती स्वीकार करें।

ये जमाना मुझे क्या मिटायेगा,
इस जमाने में दम नहीं।
जमाना मुझसे है,
मैं जमाने से नहीं।।

खुशियाँ बाँटो

हँसना एक खुमारी है, रोना एक बीमारी है।
बिना मोल मिलती मुस्कानें, फिर कैसी लाचारी है!
माना तुमको बहुत मिले गम, अश्कों से भीगा है दामन।
दु:ख में ही उलझोगे कब तक, सुख की चाह नहीं करता मन?
खुशी नहीं जागीर किसी की, यह मेरी और तुम्हारी है।।

इस जग में जो भी आया, उसने दर्द बहुत है पाया।
धूप-छाँव का खेल जिंदगी, बहुत अँधेरे ने भटकाया।
भूलो, कल की रात साथियो, अब सूरज की बारी है।।

कब तक तुम करते जाओगे, गम और आँसू का व्यापार?
बचे हुए पल की झोली में, कुछ तो भर लो प्यार दुलार।
पीड़ा तो है राख की ढेरी, पर जीवन चिंगारी है।।

जो बीता उसे भूलना बेहतर, जी भरकर हम जिएँ आज में।
कल की किस्मत कौन जानता, आहें या खुशियों के नगमे?
काल-चक्र का अविरल गति से, यही सिलसिला जारी है।।

बाँट सको तो खुशियाँ बाँटो, घटा सको तो दर्द घटाओ।
जिन आँखों में अश्क भरे हैं, उनके आँसू पोंछ दिखाओ।
इस धरती को स्वर्ग बनाना, हम सबकी जिम्मेदारी है।
हँसना एक खुमारी है, रोना एक बीमारी है।।

–डॉ.चन्द्रमोहन गुप्ता, जवाहरनगर, विदर्भ

पुरुषोत्तम संगमयुग और सृष्टि-चक्र

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

इस लेख-माला द्वारा हम पुरुषोत्तम संगमयुग के बारे में विचार कर रहे हैं परन्तु पुरुषोत्तम संगमयुग के बारे में जानने से पहले सृष्टि के बारे में पूर्व भूमिका जानना जरूरी है। सृष्टि के निर्माण के बारे में विज्ञान और धर्म दोनों का अलग-अलग विचार है। विज्ञान के द्वारा यह माना जाता है कि सृष्टि की रचना हुई और वह आगे चल रही है। विज्ञान के द्वारा विश्व के भविष्य के बारे में जानना इतना संभव नहीं है जितना धर्मों के आधार पर हम जान सकते हैं।

सृष्टि की रचना परमात्मा ने कैसे की, इस बारे में विभिन्न धर्मों में विभिन्न विचारधाराएँ हैं। उनसे मुख्य बात यही सामने आती है कि भविष्य में विनाश होगा। परमात्मा धर्मराज के रूप में होंगे, उनके पास हमारा हिसाब-किताब होगा, वो हमारा हिसाब लेंगे। हिन्दू धर्म में तो 'चित्रगुप्त की किताब' के बारे में अनेक बातें हैं। अन्य धर्मों में भी ऐसी ही बातें हैं कि परमात्मा या खुदा अंत में हमें किये हुए कर्मों के अनुसार सजायें देंगे। इस विश्व विद्यालय द्वारा एक बार अन्तर्राष्ट्रीय निबंध स्पर्धा 'पुनर्जन्म' के बारे में रखी गयी थी। एक बहन ने अपने निबंध में एक सुंदर बात लिखी कि मेरे इस्लाम धर्म के मुताबिक पुनर्जन्म नहीं है, एक बार एक व्यक्ति शरीर छोड़ता है तो वह कब्र-दाखिल हो जाता है, कयामत के समय, खुदा के दरबार में हरेक रूह को कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल मिलता है। परन्तु मेरे मन में एक शंका है कि यदि एक बच्चा जन्म के दो दिन के अंदर शरीर छोड़ देता है तो उस दो दिन के बच्चे द्वारा क्या पाप या पुण्य किया गया जो उसका इन्साफ खुदा करेंगे। दो दिन की जिन्दगी के लिए सारा समय कब्र के नीचे सोना पड़े, यह कोई तर्कयुक्त बात नहीं है। इस प्रकार से, जिन धर्मों में पुनर्जन्म की मान्यता नहीं है उनके सामने प्रश्न है कि इन्साफ के बाद उन रूहों का क्या होगा। कई धर्म मानते हैं कि सृष्टि-चक्र घूमता रहता है। ईसाई धर्म के अंदर भी 'नोहा आर्क' (NOHA `S ARCH) द्वारा यह मान्यता है विनाश में बहुत बरसात आएगी और उससे पहले एक दिव्य आवाज सुनाई देगी कि अभी थोड़े समय में प्रलय होगी, इसलिए एक नाव में वर्तमान सृष्टि की सभी जड़ी-बूटियाँ और मुख्य-मुख्य वृक्षों के बीज आदि एकत्रित करके रखे जाएँ। जलप्रलय के समय पर एक बहुत बड़ी मछली उस नाव को खींच करके आगे ले जाएगी। इसके बाद नई सृष्टि में, नाव में रखे हुए सभी बीज आदि पुन: अंकुरित होंगे। नई आत्माएँ कहाँ से आती हैं और पुरानी आत्माओं का खुदा के इन्साफ के बाद क्या हुआ, उसके बारे में पूर्ण विचार जहाँ तक मैंने ईसाई धर्म का अध्ययन किया है, मुझे नहीं मिले हैं। मैं यह दावा नहीं कर सकता हूँ कि ऐसे विचार ईसाई धर्म में नहीं हैं। मुझे सम्पूर्ण धर्म का पता नहीं है।

सृष्टि-चक्र अनवरत है। सत-युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग – इन चार युगों की संकल्पना हिन्दू धर्म के विभिन्न पंथों या सम्प्रदायों में है। जब मैं छोटा था तब एक विद्वान महात्मा से मेरी बात हुई। मैंने उनसे पूछा कि रामायण, महाभारत, भागवत तो वही हैं फिर भी अलग-अलग लेखकों ने अलग-अलग प्रसंगों के द्वारा क्यों विभिन्न बातें बतायी हैं? मिसाल के तौर पर भवभूति जी ने लिखा है कि राम-रावण के युद्ध के समय, रावण बुरी तरह से घायल हो जाता है और मृत्यु-शय्या पर सोया होता है। उसका सारथी उसे महल में वापिस ले जाता है। तब श्रीराम,

लक्ष्मण को कहता है कि आप लंका नगरी में जाओ, वहाँ रावण से मिलो। क्योंकि रावण बहुत विद्वान, तपस्वी और महत्त्वाकांक्षी है, उसकी क्या महेच्छा है, वह जानकर आओ। लक्ष्मण लंका नगरी में गया और रावण के महल के कमरे के बाहर जोर से चिल्लाया – ''हे रावण! तेरा अन्तकाल नजदीक है, अब तू बता दे कि तेरी क्या महत्त्वाकांक्षा है?'' तब रावण कटाक्ष में कहता है कि क्या अयोध्या में शिष्य जब गुरु के पास जाते हैं तो बाहर से चिल्ला-चिल्लाकर बात करते हैं या गुरु-शिष्य का विनयपूर्वक संबंध है? रावण की यह बात सुनकर लक्ष्मण शर्मिन्दा हो जाते हैं और रावण के कमरे में दाखिल होकर नम्रतापूर्वक श्रीराम का सन्देश सुनाते हैं और कहते हैं कि बड़े भाई ने कहा है कि आप अपनी महत्त्वाकांक्षा बताइये।

अब यह प्रसंग वाल्मीकी रामायण में और तुलसीकृत रामायण में नहीं लिखा है। ऐसे ही महाभारत में लिखा हुआ है कि कौरव और पाण्डव जब छोटे थे तब साथ में ही रहते थे। एक दिन कौरवों ने लड्डुओं में जहर मिला दिया और भीम ने वे लड्डु खाये। फिर सभी कौरव भीम के शरीर को उठाकर नदी में डाल आये। भीम का शरीर वज्र जैसा मजबूत था इसलिए उसका शरीर नदी के तट को तोड़ कर के नीचे पाताल में चला गया। नीचे नाग लोग रहते थे। उन्होंने भीम के शरीर का विष चूस लिया, भीम को होश आ गया और बाद में नागराजा ने अपनी नागकन्या के साथ भीम की शादी करायी। यह प्रसंग महाभारत की सभी पुस्तकों में नहीं है।

सीता-स्वयंवर की बात भी सभी रामायणों में नहीं है। परशुराम, श्रीराम जी से मिलते हैं, यह बात भी सब में नहीं है। गुजराती का एक लेखक अपने विचार-प्रमाण रामायण अब लिख रहा है। उसमें केकैयी को राम का शुभचिन्तक बताया है। राम के अभिषेक से पहले वह सोचती है कि अगर यह युवराज बन गया तो फिर रावण को मारने का उसका अवतार रूप का कर्त्तव्य असम्भव हो जाएगा। इसलिए वह श्रीराम का वनवास मांग लेती है और बाद में विदाई के समय श्रीराम को उनके अवतार कृत्य के बारे में बताकर उनके दिल में अपने लिए स्नेह-सम्मान निर्मित कर लेती है।

ये सब बातें सुनकर विद्वान ने उत्तर दिया कि यह सृष्टि-चक्र घूमता ही है और हर एक युग में राम-रावण, कृष्ण-अर्जुन आदि सब होते ही हैं किन्तु 100% एक-समान नहीं होते हैं। उसी कारण थोड़ा-थोड़ा प्रसंगभेद होता है। उस विद्वान ने कबूल किया कि सृष्टि-चक्र घूमता है और मुख्य-मुख्य अवतार-कृत्य और प्रसंग एक समान होते हैं। बाकी थोड़ा-थोड़ा प्रसंगभेद हो जाता है। ग्रीक-दर्शन में लिखा है कि यह सृष्टि-चक्र हर 10 हज़ार वर्ष के बाद हूबहू वर्तुलाकार घूमता है।

✪ ✪

बल्लबगढ़- कला एवं संस्कृति जागृति अभियान के कार्यक्रम में फरीदाबाद के महापौर भ्राता अत्तर सिंह को गुलदस्ते द्वारा स्वागत करते हुए।
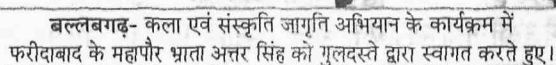
स्वर्णिम युग

(जुलाई ,04 अंक में, परमपिता परमात्मा शिव द्वारा उद्घाटित तथ्यों के आधार पर हमने जाना कि स्वर्णिम युग में राजनीति, व्यवस्थापन, दरबार, समाज, संस्कृति, भाषा आदि कैसे होते हैं। अब आगे पढ़िए ...)

स्वयंवर

शादी-समारोह बड़े पैमाने पर किए जाते हैं। मित्र-सम्बन्धी आकर सबको हार पहनाते हैं और एक-दूसरे के मस्तक पर तिलक करते हैं। वहाँ प्रेम-विवाह नहीं होते। दोनों परिवारों के सभी सदस्य मौजूद रहते हैं। वधू के साथ दहेज नहीं पर उपहार दिए जाते हैं। उपहार के रूप में गाँव भी दिए जाते हैं। साथ ही धन के रूप में सोने-हीरे-जवाहरातों के विभिन्न प्रकार के गहने देते हैं। इसके अतिरिक्त पशुधन, दास-दासियाँ आदि भी देते हैं। शादी के अवसर को महीनों तक उत्सव के रूप में मनाते हैं। महीनों पूर्व से विशेष रास-गीत-संगीत आदि द्वारा खुशियाँ मनाते हैं। शहनाई के सुर वातावारण को संगीतमय बनाए रखते हैं। ढोलक के ताल पर मित्र-सम्बन्धी रास एवं नृत्य करते हैं। वहाँ किसी एक के घर में स्वयंवर हो तो सारे गाँव में सजावट की जाती है और राजा-महाराजा के घर में विवाह हो तो सारी राजधानी को रंगबिरंगे फूलों से सजाया जाता है। ऐसा लगता है कि सारी राजधानी में कोई उत्सव मनाया जा रहा है। शादी बहुत शानदार तरीके से होगी। शादी के बाद दोनों का नाम बदल जाएगा। श्री कृष्ण, श्री नारायण कहलायेंगे और श्री राधा, श्री लक्ष्मी कहलायेंगी। इसके बाद इनके राज्याभिषेक का उत्सव मनाया जाता है। वहाँ माता-पिता ही पुत्र के सिर पर मुकुट पहनाते हैं। वे अपने बच्चों के लिए महल बनवाते हैं। देवी-देवताएँ मनोरंजन की कला में निपुण होते हैं। संगीत, नाटक, कविता आदि में भी माहिर होते हैं। श्री कृष्ण का नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। अवश्य ही राजकुमार और राजकुमारियाँ एक साथ रास करते होंगे लेकिन प्रजाजन, राजाई परिवार के सदस्यों के साथ रास नहीं कर पायेंगे।

आपसी सम्बन्ध

स्वर्ग में देवताओं के सम्बन्ध चाहे राजा-प्रजा के बीच हों या राजघराने के पारिवारिक सम्बन्ध, उनमें अनोखा स्नेह होता है। वहाँ के स्नेह के लिए कहा जाता है कि वहाँ जानवर अर्थात् शेर और गाय भी एक ही घाट पर पानी पीते हैं। जिस राजा के राज्य में जानवर भी लड़ाई-झगड़ा नहीं जानते हों तो राजा-प्रजा में कितना आपसी स्नेह होगा और दैवी परिवारों में आपस में कितना प्रेम होगा, यह हम आसानी से समझ सकते हैं। नि:स्वार्थ भावना के कारण वहाँ आपसी सम्बन्धों में स्नेह बना रहता है और इसी कारण दैवी परिवारों में, राजघरानों में, समाज, राज्य एवं देश में एकता बनी रहती है, आपस में भाईचारा रहता है। वहाँ महाराजा, राजा, साहूकार, प्रजा, दास-दासी ऐसे अनेक पद होते हुए भी न ही महाराजा-महारानी वा राजा-रानी में अहंकार या अभिमान होता है और न ही प्रजा व दास-दासियों को 'हम निम्न स्तर के हैं' ये लघुताग्रंथी होती है। राजा, अपनी प्रजा की पालना सन्तान की तरह करते हैं और प्रजा भी पालना लेते हुए उन्हें मात-पिता की नजरों से आदर-सम्मान देती है। वहाँ के सम्बन्धों में किसी भी प्रकार के बंधन नहीं होते जिससे कि किसी भी प्रकार का दु:ख या अशान्ति हो। यहाँ माँ-बाप अपने बच्चों की पालना तो करते हैं परन्तु यह स्वार्थ भी रखते हैं कि वे बुढ़ापे में हमारा सहारा बनें। यह स्वार्थी स्नेह ही मोह का बंधन बन कर दु:ख का अनुभव कराता है। वहाँ बच्चे माँ-बाप को छोड़ कर अलग नहीं रहते।

जन्म और मृत्यु

स्वर्णिम युग के आदि की

जनसंख्या लगभग नौ लाख होगी, फिर वृद्धि को पाती रहेगी। सतयुग की समाप्ति पर दो करोड़ के करीब होती है। त्रेतायुग की समाप्ति तक जनसंख्या 33 करोड़ होती है। वह युग 'अशोक वाटिका' कहलाता है। वहाँ कोई शोक नहीं होता। जन्म से लेकर, शरीर त्याग देने तक हर क्षण आनन्द में बीतता है। सुवर्ण युग में देवी-देवताओं का जन्म, कलियुग के नियम प्रमाण नहीं होता, योगबल द्वारा, पवित्रता से होता है। कई लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते परन्तु अपने साधारण जीवन में भी कई ऐसी बातें हैं जैसे कि आँख आना, यह बीमारी जिनको आँख आयी है, उनको देखने मात्र से हो जाती है। ऐसे ही हम अगर किसी खाने की चीज का सिर्फ नाम भी सुन लेते हैं या उसकी खुशबू आ जाती है तो भी हमारे मुँह में पानी आ जाता है। अगर हमारे मन के संकल्प से ये बातें हो सकती हैं तो वहाँ योगबल से बच्चे क्यों नहीं हो सकते? संकल्पों से शरीर की रचना बनती है। देवी-देवताओं के संकल्प अति शक्तिशाली होते हैं। वहाँ पर नर और नारी एक-दूसरे को देख कर शक्तिशाली संकल्पों से अर्थात् योगबल से बच्चे को जन्म देते हैं। महाभारत में वर्णित यह मिसाल हम जानते हैं कि कुंती ने सूर्य के द्वारा कर्ण को माँग लिया था। यही कारण है कि बच्चे को गर्भ में यातनाएँ नहीं भोगनी पड़ती और न ही माँ को पीड़ा सहन करनी पड़ती है। जन्म के समय पर साक्षात्कार होता है। गायन है कि देवकी मय्या को भी श्री कृष्ण के जन्म से पहले साक्षात्कार हुआ था। वहाँ यह भी कायदा है कि बच्चा किस आयु में आयेगा? ऐसे नहीं कि 15-20 वर्ष में कोई पैदा होगा, जैसे कि यहाँ होता रहता है। वहाँ औसत आयु 150 वर्ष की होती है, तो आधी उम्र के आस-पास पैदाइश होती है। यह कायदा है कि पहले बच्चे का जन्म होता है और 7-10 वर्ष के पश्चात् बच्ची का जन्म होता है। परन्तु एक ही बच्चा और एक ही बच्ची होगी।

वहाँ कभी कोई किसी को तंग नहीं करते हैं। बच्चे आदि भी तंग नहीं करते हैं। बहुत खुश रहते हैं। वहाँ अकाले मृत्यु नहीं होती है। अपनी इच्छा से शरीर छोड़ते हैं, मजबूरी से नहीं। जैसे पुराना वस्त्र अपनी इच्छा से बदल लेते हैं, वैसे ही शरीर रूपी वस्त्र भी समय प्रमाण, आयु के प्रमाण अपनी इच्छा से बदल लेंगे। वहाँ लम्बी आयु होने का आधार है पवित्र एवं निरोगी तन जिसमें किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं होती है और न ही बुढ़ापे में दाँत गिर जायेंगे और न ही शरीर में झुर्रियाँ पड़ेंगी। न ही बुढ़ापे में कमर से झुक कर टेढ़े-बाँके होंगे जिसके कारण हाथों में लकड़ी का सहारा लेना पड़े और न ही आँखों में मोतिया आएगा। आँखों पर चश्मा भी नहीं चढ़ेगा और न ही कान से बहरे होंगे। न ही लूले-लंगड़े होंगे। शुद्ध पौष्टिक आहार के कारण शरीर अंत तक सम्पूर्ण स्वस्थ रहेगा और शरीर छोड़ने के पहले भी साक्षात्कार होगा कि अभी यह शरीर छोड़ कर बालक बनूँगा। शरीर ऐसे छोड़ेंगे जैसे कि मक्खन से बाल, बैठे-बैठे आराम से, बिना तकलीफ के।

शरीर को उठाने वाले चाण्डाल आयेंगे और शव को अपने विमान में डाल कर ले जायेंगे जैसे कि आजकल एम्बुलेंस होती है। यहाँ की तरह उठा कर ले जाना, यह तकलीफ की बात वहाँ नहीं होती। वहाँ चाण्डाल होंगे परन्तु ऐसा नाम नहीं होगा। श्मशान, श्मशान नहीं लगता है। जहाँ-तहाँ सुन्दर खुशबूदार फूल खिले हुए नजर आते हैं। शीतल झरना बहता रहता है। वहाँ शरीर को बिजली पर रखा और कुछ क्षणों में समाप्त। इसके लिए सुन्दर डिज़ाइन वाली मशीनरी होगी जो सोलार द्वारा चलेगी।

परिवार

परिवार में 4 सदस्य होते हैं, दो

बच्चे और माँ-बाप। बहुत से नौकर भी होते हैं। राजकुमार और राजकुमारी अपने ही उम्र के बच्चों के साथ बगीचों में खेलते हैं। हीरों से जड़े झूलों पर झूलते हैं। छोटे बच्चे भी विमानों को चला कर अपने मित्रों से मिलने दूसरी राजधानियों में जाते हैं। जब किसी दैवी कुमार और दैवी कुमारी के व्यक्तित्व के पहलू समान होते हैं, तो पालक समझ जाते हैं कि यह जोड़ा अनुरूप है। आमतौर पर पहले कन्या कुमार से पूछती है कि क्या वह उससे शादी करने का दिल रखता है? मन की स्थिति ऐसी होती है जिसमें संकल्प नहीं होते परन्तु अर्थ की पहचान होती है। आत्माओं के बीच, गहरे स्नेह की लहरें उत्पन्न होती रहती हैं।

पुत्र को गद्दीनशीन करके, पालक राज्य के कारोबार की देखरेख करते रहते हैं। पालक स्वेच्छा से कहते हैं 'उन्हें राज्यकर्त्ता बन कर अभी राज्य कारोबार करने दें'। नैसर्गिक रीति से लेनदेन होती है। वे जहाँ भी जाते हैं, उपहार जरूर देते हैं। महाराजा और महारानी के बीच स्नेह होता है परन्तु यह स्नेह निजी सम्बन्ध तक सीमित नहीं होता। यह कोई मतलब का स्नेह नहीं होता है। उनका स्नेह रॉयल परिवार और प्रजा के साथ बाँटा जाता है।

जीवन पद्धति

वहाँ के दर्जी सुन्दर परिधान बनाते हैं, सोनार उतने ही सुन्दर अलंकार निर्मित करते हैं। अलंकार वजन में बहुत ही हल्के होते हैं क्योंकि वे शुद्ध सोने के बने होते हैं। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी ने कितने सारे आभूषण पहन कर रखे हैं। उनका कोई वजन महसूस नहीं होता। न ही उन्हें धारण करने में कठिनता महसूस होती है। अँगुठियाँ, कड़े, कण्ठहार हों या मुकुट, सारे शुद्ध सोने से बने होते हैं जिन पर काफी मात्रा में हीरे जड़े हुए होते हैं। हीरे भी कई सारे रंगों में उपलब्ध होते हैं। उनकी झलक ऐसी होती है मानो अन्दर कोई अग्नि जल रही हो और प्रकाश दमक रहा हो। मुकुट के ऊपर भी कई हीरे होते हैं जो उसकी सुन्दरता को निखारते हैं। हर हीरे की ऐसी चमक और रंग होता है जो सभी मिल कर इन्द्रधनुष जैसी छटायें बिखेरते हैं। परिधान बहुत ही मूल्यवान कपड़ों के बने होते हैं। जूते भी अति मुलायम मखमल के बने होते हैं जिन पर हीरे जड़े होते हैं और सोने का आवरण चढ़ा होता है। वहाँ बाल भी बहुत सुन्दर होते हैं जिनका अपना एक शाही अंदाज होता है। इनमें पहनने के लिए भी हीरों से जड़े सुन्दर आभूषण होते हैं।

सबसे सुन्दर वातावरण तब होता है जब लोगों को राजदरबार में उपस्थित होना होता है। वह उनकी जीवन शैली में बहुत ही महत्त्वपूर्ण अवसर होता है इसलिए हर देवी-देवता सुन्दर-से-सुन्दर परिधान धारण करता है। राजा भी हर दिन नया परिधान पहनता है जिसके द्वारा प्रसन्नता और नवीनता झलकती है। वहाँ सदाचार, स्वच्छता और शक्ति का सुन्दर सम्मिश्रण दिखता है और शरीर भी कमल के फूल की भाँति होता है, हर अंग एक पंखुड़ी की तरह मुलायम और योग्य आकार का होता है। उनसे प्रेम और पवित्रता की सुगंध वातावरण में बिखरती है। दैवी गुण हर व्यक्ति में आन्तरिक रूप से उपस्थित रहते हैं और उनके सारे कर्मों में साकार होते नजर आते हैं। शरीर पूर्ण रूप से दोष रहित होता है जैसे कि कोई परिपूर्ण हीरा हो। हाथों-पावों का आकार और लम्बाई शरीर के अनुरूप होती है जिन पर वस्त्र धारण करने पर वे और ही आकर्षक दिखाई देते हैं। त्वचा बहुत मुलायम होती है, उसे किसी बनावटी सजावट या सुगन्ध की कोई आवश्यकता नहीं होती है। वहाँ प्राकृतिक रूप से ही, व्यक्ति का रूप किसी अलंकार की भाँति चमकता है। **(समाप्त)**

★★★

दीपावली....पृष्ठ...01 का शेष

ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जगा कर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं। तब ही इस देवभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना होगी जहाँ रत्न-जड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी-दूध की नदियाँ बहेंगी। इस युगान्तरकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं। इस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मन्दिर में सदा दीप नहीं जलता है लेकिन आज भी भगवान विश्वनाथ के मन्दिर में अनवरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हैं।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर जब हम निर्विकारी बनते हैं तो हमारा एक नया जन्म 'मरजीवा जन्म' होता है। हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं तथा नये दैवी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी इस दिन पुराने खाते को बन्द कर, नया खाता खोलते हैं। अवढर दानी, भोलानाथ भगवान शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बन्द कर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

दीपावली के दिन जुआ खेलने का बहुत महत्त्व है। कहते हैं कि जो इस दिन जुआ नहीं खेलता है उसकी अधम-गति होती है। इसका भी गम्भीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुए में कुछ सम्पत्ति हम दाव पर लगाते हैं जो कई गुना होकर हमें मिलती है। पावन सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की स्थापनार्थ जब पतित पावन परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं तो वे हम जीवात्माओं को आदेश देते हैं कि अपने कौड़ी तुल्य तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगा दो तो 21 जन्मों के लिए तुमको कंचन काया, सतोप्रधान मन और अखुट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। धन्य हैं वे नर-नारी जो इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ऐसा ईश्वरीय जुआ खेलते हैं। दीपावली के आध्यात्मिक रहस्यों को न जानने के कारण ही आज मनुष्य उसे सामाजिक उत्सव के रूप में ही मानते हैं और महान आध्यात्मिक उन्नति से वंचित रह जाते हैं। कहाँ यह ईश्वरीय जुआ और कहाँ वह स्थूल जुआ जिसके कारण कितने लोगों को जेल की यातना सहनी पड़ती है। आइये, अब हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मन्दिर की सफाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करेंगे, आसुरी अवगुणों और संस्कारों का खाता बन्द कर दैवीगुण सम्पन्न बनेंगे तथा अपने तन-मन-धन को मानव-मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हो जायेगी जहाँ दु:ख-अशान्ति का नामोनिशान भी नहीं रहेगा। शेर-बकरी एक घाट पर जल पियेंगे और अखुट धन-सम्पत्ति से नर-नारी मालामाल हो जायेंगे। इतना महान अन्तर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करने में!

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : shantivan@bkedu.net (Ph. No. (02974)- 228125, 228126 gyanamrit@vsnl.com

1. बैंगलोर (संगमतीर्थ)- 'चरित्र-निर्माण में साहित्य का योगदान' विषयक कार्यक्रम में पधारे साहित्य की दुनिया के सितारे ब्र.कु. सरला दादी जी के साथ समूह-चित्र में। **2. नई देहली**- 'स्वर्णिम संस्कृति जागृति अभियान' के उद्घाटन कार्यक्रम में उद्योग तथा श्रम मंत्री भ्राता मंगतराम जी उद्घाटन भाषण देते हुए। मंच पर विराजमान हैं–राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ललित कला राष्ट्रीय अकादमी के सचिव डॉ. भ्राता सुधाकर शर्मा जी तथा ब्र.कु. बृजमोहन भाई जी। **3. शिलांग**- ब्र.कु. नीलम बहन मेघालय के मुख्यमंत्री भ्राता डी.डी. लपांग को ईश्वरीय सौगात देती हुई। **4. अलपी**- ब्र.कु. दिशा बहन केरल के पर्यटन एवं मन्दिर मंत्री भ्राता के.सी. वेणुगोपाल जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई। **5. पूना**- सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री ऐश्वर्या राय को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. रूपाली बहन तथा ब्र.कु. दीपक भाई। **6. काठमाण्डौ**- 'आध्यात्मिक जागरण' सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए नेपाल के कृषि तथा सहकारिता मंत्री भ्राता होमनाथ दहाल जी। साथ में ब्र.कु. राज बहन जी, ब्र.कु. किरण तथा अन्य। **7. सोजतसिटी**- खनिज एवं वन मंत्री भ्राता लक्ष्मीनारायण दवे का स्वागत करके ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. कविता बहन। **8. कुडप्पा**- ब्र.कु. सुशीला बहन, आ.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता वाई.एस. राजशेखर रेड्डी जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई। **9. अहमदाबाद**- ग्लोबल हॉस्पीटल के डॉ. रमेश भाई जी को 'यूनो 2004 नेशनल अवार्ड फॉर मैग्नेटो थेरेपी' तथा 'स्पेशल अवार्ड ऑफ मेडल फॉर वर्ल्ड पीस यूनो 2004' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर गुजरात वि.स. के अध्यक्ष मंगल भाई पटेल जी, चित्रकूट तथा रीवा विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता वाजपेयी जी तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे।
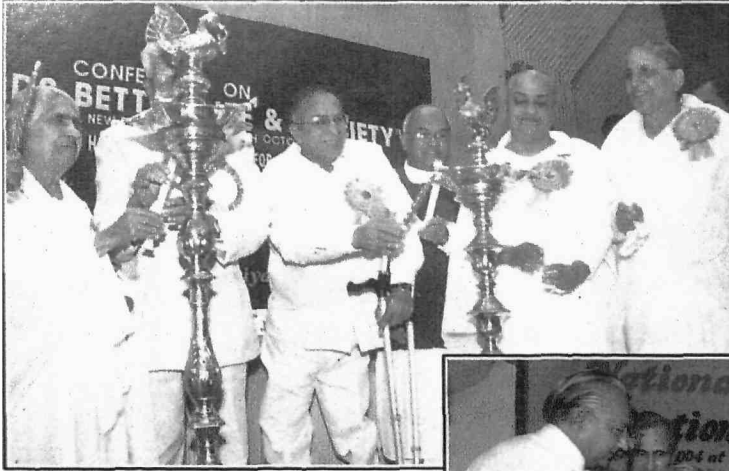
Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan – 307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

नई देहली- 'बेहतर समाज निर्माण में मीडिया की भूमिका' विषय पर विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए (बांये से)– राजयोगिनी दादी जानकी जी, पूर्व राष्ट्रपति भ्राता वेंकटरामन जी, केन्द्रीय सूचना मंत्री भ्राता जयपाल रेड्डी जी, भ्राता भास्कर राव जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी तथा ब्र.कु. शुक्ला बहन जी।

आबू रोड (शांतिवन)- 'राजयोग – एक औषधि' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए – ब्र.कु. भ्राता निर्वैर जी, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय सचिव भ्राता प्रसन्न होता, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. भ्राता बृजमोहन जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन जी तथा अन्य।

आबू रोड (शांतिवन)- मीडिया महासम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, भ्राता रामचन्द्र पाणिग्रही जी, भारत सरकार के गृह मंत्रालय में सलाहकार तथा सूचना अधिकारी, ब्र.कु. भ्राता ओमप्रकाश जी, ब्र.कु. भ्राता करुणा जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी तथा अन्य।

आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- 'शांति अन्वेषण' विषयक परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. आशा बहन जी, सी.बी.आई. के पूर्व निदेशक भ्राता डी.आर. कार्तिकेयन जी, कांग्रेस के पूर्व महासचिव भ्राता एस.एस. महापात्र जी तथा अन्य।